ओ३म्

तर्क इस्लाम

जिसे

महाशय धर्मपाल बी०ए०

भूतपूर्व

मालवा अब्दुल गफूर बी०ए० हेडमास्टर इस्लामियां स्कूल, गुजरांवालाने ता० १४ जून सन् १९०६ ई० को गुजरांवाला आर्य समाजमें वैदिक धर्ममें दीक्षित होनेके समय व्याख्यान दिया ।

मुद्रक व प्रकाशक

गोविन्दराम हासानन्द

"वैदिक प्रेस"

२० कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता ।

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर . 5341 ....
पु. परिग्रहण क्रमांक .....

ओ३म्

तर्क इस्लाम

गुरु विरजानन्द दण्डी
5341

जिसे

महाशय धर्मपाल

भूतपूर्व

मौलवी अब्दुल गफूर बी०ए० हेडमास्टर इस्लामिया स्कूल, गुजरांवालाने ता० १४ जून सन् १९०६ ई० को गुजरांवाला आर्य समाजमें वैदिक धर्ममें दीक्षित होनेके समय व्याख्यान दिया।

मुद्रक व प्रकाशक

गोविन्दराम हासानन्द

"वैदिक प्रेस"

२० कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

ी बार
११००

सन् १९३५ ई०

मूल्य
चार आना

ओ३म्

तर्क इसलाम

उपस्थित सभ्यगण ! मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि आप कतिपय महाशयोंने तो इस नगरसे और कतिपय महानुभावोंने दूर देशस्थ नगरोंसे इस ग्रीष्म ऋतुके कष्टको सहन करके इस उत्सवको अपने आगमनसे सुशोभित किया है।

इस सामान्य धन्यवादके अतिरिक्त मैं साधारणतया आर्य्यसमाजको और विशेषतया गुजरानवाला समाजको बधाई देता हूं और आनन्द हुलास आच्छादित करता हूं कि वह आज एक श्रेष्ठ और निपट निराले कार्य्यके करनेके अर्थ उद्यत है और आस पासके विपक्षी और विप्रलम्भ तथा उल्हनोंको किञ्चित ध्यानमें न लाकर एक जन्मके मुसलमान (यवन) को अपने साथ मिला रहा है।

आर्य्यसमाज गुजरानवालाको मैं और भी आनन्द व हर्षके साथ स्मरण करता हूं कि वह इस कार्यमें असीम दृढ़ रहा, यद्यपि विपक्षियोंकी ओरसे आर्य्यसमाज गुजरानवालाके पास बहुधा पत्र आते रहे कि वह "आस्तीनका सांप" है, इससे बचकर रहना

कपटी और विश्वासघाती पुरुष है, धोखेमें मत आजाना, यह भेद लेनेके लिये आया है और मुसलमानों (यवनों) की ओरसे है! परन्तु है प्रशंसनीय उनका साहस कि उन्होंने असम्बद्ध प्रलाप करनेवालोंका कुछ ध्यान न करके इस कार्य्यको सर्व प्रकार परिणाम तक पहुंचानेकी तत्परता प्रकट की! हां जहां आर्य्यसमाजके सभासदोंको इस प्रकार असन्तुष्ट करनेका प्रयत्न किया गया, वहां मुझे भी बहुधा मुसलमानलोगोंने आर्य्यसमाज की ओरसे असन्तुष्ट करनेमें कुछ शेष नहीं छोड़ा। कोई नियोग का विवाद सम्मिलित करने लगा, कोई आवागमनका विषय प्रविष्ट करने लगा और अन्य बातें सुनने लगा और जहां तक हो सका, अन्य अनर्गल लेखोंसे मेरे पगोंको कम्पायमान करना चाहा। परन्तु उन सत्यसे बहिर्मुखोंको यह पता नहीं था कि जब किसीके हृदयपर सचाईकी मोहर अंकित हो जाती है तो वह असङ्गत प्रलाप और आस पासके लोगोंकी आयं बायँ शायँ से मिट नहीं सकती है, न उसको लेख दूर कर सकता है न वाद विवाद, न धमकी न डर न तलवार, न कृपाण न कोई लालसा आदि! सचाई शिरके साथ जाती है। शरीर छेदन किया जा सकता है किन्तु उस सत्य विश्वासके चिन्हको हम छेदन नहीं कर सकते! अतएव बड़े धन्यवादका स्थल है कि आज हम निर्विघ्नरूपसे यहां पर एकत्र हो कर इस श्रेष्ठरीति (संस्कार) को पूरा कर रहे हैं। जो सचाई केवल (सत्यता) सचाई पर निर्भर है जिसकी पेंदीमें न कोई लोभ है, न डर न कोई बहका-

वट मौजूद है न फुसलावट, न तलवार मौजूद है किन्तु सत्यता को ग्रहण करके और सत्यता पर मोहित होकर मैं आज एक मत को छोड़ कर दूसरे धर्ममें सम्मिलित होता हूं! मैंने यवन मत (मुसलमानी मजहब) को क्यों छोड़ा? इस प्रश्नका उत्तर प्रत्येक मनुष्य नहीं दे सकता! सम्भव है कि बहु ओर मत (धर्म) परिवर्तनकी घटना सुनकर वह अपने हृदयमें कोई उलटा उत्तर प्राप्त करलें और उलटी रीति पर अपने मनमें शान्ति प्राप्ति करलें।

किन्तु इनको विश्वास करना चाहिये कि मैंने उन कारणों को लेकर मत परिवतन नहीं किया कि जिन कारणोंको हम बहुधा अपने आस पासके मत परिवर्तन कर्त्ताओंको वर्तावमें लाते हुए पाते हैं उदाहरणतया—

(१) बहुतसे लोग धन और रुपयेके अर्थ मत परिवर्तन कर लेते हैं।

(२) बहुतसे जन किसी स्वरूपवती स्त्री के पीछे धर्म छोड़ बैठते हैं, और बहुधा दृष्टान्त देखे सुने जाते हैं कि अमुक पुरुष अमुक कंचनीके हेतु अमुक हो गया इत्यादि २।

(३) बहुतसे पुरुष नौकरी व किसी पदके लालचमें आकर मत परिवर्तन करते हैं।

(४) बहुतसे जन किसी भयसे अथवा धमकीसे मत परिवर्तन करते हैं। हां अनेकने तलवारके भयसे धर्म परिवर्तन किया है!

(५) अनेक पुरुष किसी मत और सम्राटीय सभा (सोसायटी) का मत केवल इस कारण स्वीकार कर लेते हैं कि सोशल (सभा सम्बन्धी) और पोलेटीकल (राज्यकीय) अधिकार हमें मिल जावेंगे।

(६) बहुतसे लोग दूसरे मतमें धनी और पढ़े लिखे पुरुषोंकी एक बहुत बड़ी संख्या देख कर मत परिवर्तन कर लेते हैं

(७) बहुतसे मनुष्य अपनी बिरादरी या मा बापको धमकानेके लिये किसी अनबन पर मत परिवर्तन कर बठते हैं।

(८) अनेक जन अपने सहधर्मियोंकी ओरसे कोई चोट खाकर उनको अपने मत परिवर्तनसे धमकानेके लिये ही बिना सोचे समझे धर्म परित्याग कर बैठते हैं। और बहुधा धोखेसे ही धर्म छोड़ बैठते हैं परन्तु मैंने जो इस्लाम परित्याग किया है वह पूर्वोक्त कारणोंमेंसे किसी कारणको ग्रहण करके नहीं किया

आर्य्यसमाजकी ओरसे मुझे धन, द्रव्य, स्त्री पद या किसी अन्य अधिकारका लालच नहीं दिया गया, और यदि सच पूछो तो आर्य्यसमाजके पास इस प्रकार लालच ही कहां है यदि कल्पना करो कि कोई हो भी तो क्या ऋषियोंकी सन्तान किसी लालच या धोखेसे एक पुरुषको अपने साथ मिलाकर यह समझ सकता है कि हमने धर्मका काम किया! किन्तु महान् अधर्म और महान् पापका काम है तो फिर क्या आर्य्यसमाजने मुझे बहका लिया! प्रथम तो आर्य्यसमाजका काम कतिपय मतोंके सदृश्य बहकाकर संख्या बढ़ाना कदापि नहीं है कदाचित् यदि

हम यह कल्पना भी करल कि आर्य्यसमाज बहका लेता है तो किसको ? क्या एक यूनीवर्सीटी (विश्व विद्यालय) के डिगरी प्राप्तको, एक हाई स्कूलके हेडमाष्टरको, और फिर एक मुसलमानको (ई ख्याल अस्तो मुहाल अस्तो जुनूं) ?—ऐसा विचार करना दुस्तर बरन उनमत्तता है !

आर्य्यसमाजके किसी आदमीने मुझे नहीं बहकाया, आर्य्यसमाजके किसी आदमीने मुझे नहीं खींचा, किन्तु उस सत्यताने मुझे आकर्षित किया जो भविष्यमें मेरे समान बहुतोंको खींचेंगी , वह सत्यता क्या है ? वह वैदिक धर्मकी जिसके चिन्ह मैं यहां अपने आस पास कहीं २ द्वार और भीतोंपर देख रहा हूं ? इस सत्यताके जलने मेरे पिपासाकुलित हृदयको आद्रित किया जब कि कुरानके मारुस्थली तट मेरी पिपासाकी शान्ति न कर सके जब कुरानकी बुद्धि विरुद्ध बातें मेरे डमाडोल और क्लेशित मस्तकको कुछ संतोष नहीं दे सकीं ! कुरानके बहुतसे जांगल्य और दयारहित प्रकरण मेरे नम्र हृदयको संतुष्ट न कर सके जब कुरानकी नीच कक्षाकी शिक्षा मेरे उच्च कक्षाके विचारोंका साथ न दे सकी, जब कुरानके माननेवालोंका नैष्ठिक जीवन (अमली जिन्दगी) मुझ पर आरोग्यप्रद और आत्मह्लादिक प्रभाव न डाल सकी, जब मैं इस अंधकार आच्छादित वायु चक्र में इधर उधर हाथ मारकर खेदित और श्रमाकुलित हो रहा था तो मुझे अन्दरसे निकालनेके निमित्त वैदिक शिक्षाके प्रकाशित भुवन भास्करकी रश्मियोंने मेरे पथको प्रकाशित किया, और

मुझे अन्ध कूपसे निकाल कर प्रकाशमय भूमिमें पहुंचाया, मैं अरबके मरुस्थलोंसे निकल कर गंगा और यमुनाके तटोंपर आया, जहां वेदोक्त शिक्षाका वह मिष्टाम्बु (शरबत) मिला, जिसने मेरी हार्दिक पिपासाको शान्त कर दिया। मेरे हृदय और मस्तिष्क को शान्ति प्राप्त हुई।

मुझे पुराने ऋषियों और मुनियोंका सन्तानमेंसे कुछ ऐसे चेहरे दिखाई दिये कि जिनके पास जानेसे और जिनके समीप वर्षों तक रहनेसे मुझे विश्वास होगया कि सचमुच चारों ओर अरबी मरुस्थलो और अरबके मरूस्थलीय तटसे शुष्क हुये मेरे हृदय और मस्तिष्क ही नहीं है, वरन इस समय भी बहुत से हृदय हैं जो अद्यावधि उष्ण वायुके झोकोंसे रक्षित हैं और आत्मिक प्रभावोंको हवनकी सुगन्धिके समान अब भी अपने आस पास इस प्रकार फैला रहे हैं कि जिस प्रकार सहस्रों वर्ष पूर्व गंगा और यमुनाके तटों पर बैठे हुए ऋषियों, हिमालय पर्वतकी लहलहाती हुई शिखरों पर विराजमान मुनियोंके, आत्मविवेकमें लवलीन हृदयोंसे वह आत्मिक वायु बहती थी कि जिसके झोंके सहस्रों वर्ष पश्चात् भी योरूप और अमेरिका के जाग्रत मस्तिष्कों और आत्मविवेक जिज्ञासुओंको अद्यावधि सुगन्धित कर रहे हैं, और भविष्यत्में इससे भी अधिक करेंगे! यह सुगन्धित झोके कहांसे और किसके लिये? वेदोंकी शिक्षासे सत्यता पर मोहित और आत्मविवेकके जिज्ञासुओंके लिये! भला क्या सम्भव हो सकता है कि एक ईर्षा रहित! हृदयको

चमेलीके नव विकसित पुष्पोंकी सुगन्धिका झोंका संतुष्ट करदे और वह फिर भी अपने हाथसे वर्षोंसे ग्रहण किये हुये एक जर २ चर्म वस्त्रको न गिरावें, क्या सम्भव हो सकता है कि एक पुरुषको हरित तृण संकुलित भूमि दृष्टि पड़ जावे और वह फिर मरुस्थलीय उष्ण वायुके झोकोंसे बचनेके लिये इस हरित तृण संकुलित भूमिकी ओर न भाग आवे ! नहीं कदापि नहीं ! प्रत्येक पुरुष मरुस्थलीकी अपेक्षा हरित तृण संकुलित भूमि पर अधिक रीझता है । प्रत्येक मनुष्य तिक्त जलकी अपेक्षा मिष्टाम्बुकी अधिक आकांक्षा करता है, प्रत्येक पुरुष जीर्णकी अपेक्षा नवीन सुखदका अभिरुचिक है उस दशामें कि वह सत्य विवेककी आंखसे ईर्षाकी ऐनक (उपनयन) को उतारकर सत्यको सत्य, हरितको हरित और पीतको पीत ही देखनेकी योग्यता रखता हो ! मैंने ईर्षाके प्राणान्तक रोगसे आरोग्यता प्राप्त की । मत द्वेषके काले पर्दे मेरी आंखोंके सामनेसे दूर हुए । ईर्षाकी चतुर्दिक भीतसे मेरा शिर बाहर निकला, तो क्या देखा कि जिस गड्ढेमें मैं पड़ा हुआ हूं वह मेंढ़कके कूपकी समान परिमित और संकीर्ण तथा तिमिरमय है ! जब कि इससे बाहर (सत्यता) सचाईका समुद्र अपरिमित और वैदिक प्रकाशसे प्रकाशित जीवन नौकाको मातृवत गोदसे लगाये हुए उस किनारेकी ओर ले जारहा है कि जो जीवनका उद्देश्य है । यदि मैं अपने कतिपय सधर्मियोंकी समान ईर्षाका सेवक और सत्य तथा सचाईसे घृणा करने वाला होता तो मैं कदापि इस

संकीर्ण और अंधेरे कूपमेंसे न निकल सक्ता, और मुझे वह प्रकाश न प्राप्त होता कि जिसको मैं प्रसन्नता पूर्वक वर्त रहा हूं ! पर मेरे लिये आवश्यकीय हुआ कि मैं प्रकाश और अंधेरेका निर्णय करूं, और उनमेंसे श्रेष्ठको ग्रहण करूं । मैंने सत्यता को दृष्टिमें रख कर ईर्षासे रहित होकर भिन्न २ मतोंका (Compar tive study) तुलनामय अध्ययन आरम्भ किया । एक ओर कुरान है तो दूसरी ओर बाइबिल एक ओर बुद्ध मत की पुस्तकें हैं तो दूसरी ओर वैदिक लिटरेचर (ग्रन्थ) ! मैंने कुरान और इस्लाम (यवन मत) को सबसे निकृष्ट कक्षामें पाया बाइबिल और ईसाई मतको इससे और कई कक्षा ऊपर और श्रेष्ठ पाया । किन्तु बौध मतको ईसाई मतसे उच्च पाया, मैं ईसाई मतको मान स्वीकार कर लेता, यदि ईसाईपनकी दो तसलीसेंमें कितनी ही एक अनर्गल बातों सहित मेरे मार्गमें रोक न बनती ; अर्थात् प्रथम साधारण तसलीस (अर्थात् पिता पुत्र तथा पवित्रात्मा तीनोंको ईश्वर मानना) द्वितीय विशेष तसलीस तीन मुख्य भारी पापके कामोंकी अर्थात् प्रकृतत्व, (मादयित) मांस भक्षण और मद्यपान । इससे आगे कदाचित् मैं बौद्ध मतको स्वीकार करता, यदि मुझे बुद्धमतसे अधिक प्रकाशमान वरन बुद्ध मतका उद्गमस्थान तथा निकासस्थान वैदिक धर्म न मिल गया होता ! निदान मेरे दुःखित हृदयने मुझे विवश किया कि हर प्रकारका भय और डर त्याग कर प्रत्येक भांति के उलहने और विपालंभ दृष्टि वाह्य करके, इस धर्मकी पताकाके

नीचे आजाऊं, इस सभाका सभासद् बन जाऊं कि जिसके प्लेटफार्म पर खड़े होनेका मैं आज अभिमान करता हूं। मुझे यह मान प्राप्त न होता यदि आर्य्य समाज जीवित और जागृत, सत्यता पर निर्भर और सत्यता (सचाई) पर मोहित होने वाली सुसाइटी (सभा) होकर सत्यताके नियमोंका बिना रोक टोकके प्रचार करने वाली, और किसी प्रकारकी विरुद्धता का ध्यान चित्तमें लाकर भयभीत न होने वाली सभा न होती। मैं फिर कहता हूं कि आर्य्य समाजके साहसको धन्यवाद है! वेदकी पवित्र शिक्षाने भारतवर्षमें ऐसी सुसाइटी और ऐसे पुरुष पैदा कर दिये हैं कि जो भले प्रकार जानते हैं कि सचाई (सत्यविवेक) एकही है! आजसे पचास वर्ष पूर्व एक जन्मके मुसलमान पुरुषके पगोंसे कदाचित यह मन्दिर और प्लेटफार्म अपवित्र होगया हुआ समझा जाता! परन्तु आज वह दशा नहीं है। वेदकी शिक्षाने यह सिद्धि कर दिया है जिस प्रकार एक सदाचारी जन्मका ब्राह्मण वेद मन्त्रों और उनकी सत्यता को सर्व साधारणके सम्मुख प्रकाशित करनेका अधिकारी है, वैसे ही एक सदाचारी जन्मका मुसलमान भी उसी मंदिरमें और उसी प्लेटफार्म पर खड़ा होकर वेदके सत्यज्ञानको प्राप्त करके अनेक वेदके जिज्ञासुओंके कानों तक अपनी ध्वनि पहुंचा सक्ता है! निस्संदेह वेदकी पवित्र शिक्षाका भास्कर ज्यों २ अपना प्रकाश फैलाता जायगा त्यों २ असभ्यता और अन्धकार दूर होता जायगा! और असंख्य जो पगडंडियों पर पड़े हुए हैं

इस प्रकाशके होनेसे सुखके मार्ग (विस्तीर्ण पथ) को ग्रहण कर लेंगे । निदान मैं आज अपनी मुसलमानी पगडंडीको त्याग कर वैदिक धर्मके राज्य पथ (शाहराह) में पग धरता हूं। परन्तु प्रथम इसके कि मैं बैठ जाऊं, मैं उचित समझता हूं, कि उपस्थित समुदायके सम्मुख कुछ कारण कुरानकी शिक्षाके विषयमें वर्णन करूं कि जिनके कारण मैंने "कुरानी इसलाम" को अपने हृदय और मस्तिष्कके विरुद्ध पाकर त्याग दिया।

मैंने बहुत काल तक कुरानकी छान बीन की किन्तु मुझे मोती और मणियोंके स्थानमें पत्थर और कङ्कर ही मिले, मैं कह सक्ता हूं कि आत्मज्ञानका प्यासा जो कुरानकी जांगल्य झलकके पीछे भागता है वह उष्ण वायुके झोकोंसे जो अरबके मरुस्थली सदृश अरबी कुरानमें चल रहे हैं अपनी आत्माको हानि पहुंचा लेता है । माना कि वह इससे बेसुधि क्यों न रहे। क्योंकि आत्मज्ञान कुरानसे ध्रुव तारे और पृथ्वीके परस्परकी दूरीसे कुछ कम नहीं है। यदि मैं कुरानसे आत्मज्ञान ढूंढ़ना चाहूं तो, कदाचित् मेरा यह काम इन्द्रायनकी बेलिसे मीठे खर्बूजों और नीमके पेड़से मीठे आम्रफलोंकी लालसा रखनेसे कुछ कम असङ्गत न होगा । मैंने अपने अनुभवसे कुरान और आत्मज्ञानको दो विरुद्ध दशाओंमें चलते देखा। प्रथमकी गति दक्षिणकी ओर द्वितीयकी उत्तरकी ओर! और वास्तवमें जिस शिक्षाको ग्रहण करके महमूद जैसा पुरुष (अमीनुलमिल्लता) मतका पेशवा और औरङ्गजेब जैसा पुरुष

मुहीउद्दीन अर्थात् मत जीवक बन गये। वह शिक्षा आत्म-ज्ञानको बायें कर्णसे पकड़ कर हृदयरूपी मन्दिरसे बाहर निकाल देती है! मैं स्वीकार करता हूं कि कुरान परमेश्वरको आकाश और पृथ्वीका प्रकाशक बताता है, परन्तु शोकका स्थल है, इस प्रकाश पर जो सहस्रों स्याहीके बोरे भर २ कर डाले गये हैं, उनसे परमेश्वरका प्रकाशमय चेहरा तबेसे भी अधिक काला कर दिया गया है। संसारकी उत्पत्ति विषयमें जो शिक्षा है, उसने बाईबुलकी गप्पोंको भी मात कर दिया है। कुरानमें जो कयामत (प्रलय) का चित्र (नकशा) जमाया गया है। वह निपट निराले ढङ्गका है। बहिश्त (स्वर्गके) शराब व कबाब, हूर व गिलमां सोने चांदीके आभूषणोंसे परमेश्वर प्रत्येक यती और पढ़े लिखे मनुष्यको बचावे, पशुओंकी विकलता (बिलबिलाहट) कि जिनके रुधिरसे परमेश्वरको प्रसन्नता और स्वर्गकी प्राप्ति समझी जाती है, असभ्यताके इच्छुकोंके अतिरिक्त पत्थर को भी कम्पायमान करने वाली है। सृष्टि क्रम विरुद्ध किस्से कहानियों और ढकोसलोंसे कुरानको एक साधारण प्रमाणिक पुस्तककी कक्षासे भी नीचे गिरा दिया है।

यवन मतसे भिन्न पुरुषोंको काफिर (अधर्मी) और मुशरिक * कह कर उनको अपवित्र समझने और उनसे दूर रहनेकी दीक्षाने सबसे मेल रखनेके नियमकी जड़में दीमक लगा दी है। स्त्रीको केवल खेती और मिलकियत (पूंजी) समझनेके नियमने सच्चे स्त्री और पति बननेके स्थानमें परस्पर स्वामी और सेवक के सम्बन्धको भी लज्जित कर दिया है मैं साहसके साथ कहता हूं कि कुरानी शिक्षाने कुरानको ईश्वरीय पुस्तककी पदवीसे

* वह पुरुष जो केवल ईश्वरको न मानकर उसके साथ किसी और को भी सम्मिलित करता है।

गिरा कर एक सभ्य पुरुषकी साधारण पुस्तकसे भी नीचे गिरा दिया है और कुरानके दुर्ग (किलेको कुरानकी ही बारूदने उड़ा दिया है, आज कलके बहुधा नवीन प्रकाशसे युक्त मुसलमान (यवन) मतके रक्षक इस किलेको बचानेके निमित्त अपने सर्व बलसे प्रयत्न कर रहे हैं और इस पर नवीन खोल चढा रहे है परन्तु साइन्स (प्राकृत विद्या) के नियमोंके सामने जीर्ण दुर्ग (बोदे किले) धड़ाम २ गिर रहे हैं।

उपस्थित सभ्यगण! कुरानी शिक्षा क्यों समीक्षा (एतराज) के योग्य हैं? इसके निमित्त मैं कुछ बातें आपके सन्मुख प्रविष्ट करता हूं।

प्रथम—परमेश्वर विषयमें कुरानकी शिक्षा निपट भद्दी और अत्यन्त समीक्षा (एतराज) किये जाने योग्य है। परमेश्वरको एक साधारण पुरुष कल्पना करके उसमें कुछ अच्छे गुणोंके अतिरिक्त विशेषतया ऐसे गुण भी दिखलाये गये हैं जो किसी नीच कक्षाके पुरुषमें पाये जाते हैं, मैं यहां पर उदाहरणको भांति कुछ बातें प्रकट करता हूं।

कुरानकी शिक्षा है कि परमेश्वर बड़ा मक्कार और फरेबी है देखियेः—

"मक्र किया काफ़िरोंसे और मकर किया खुदासे, और खुदा बेहतर हैं—मकर करने वालोंमें से" (सी० ३ अलउमरा आयत ५३) और इसी प्रकार सीपारा ९ सूरत इन्फ़ाल आयत ३० और सीपारा ३० सूरत उल्तारक आयत १५ व १६ और अन्य बहुतसे स्थानोंमें भी खुदा (परमेश्वर) को मक्कारोंका

मक्कार और फरेबियोंका फरेबी लिखा गया है! कतिपय भाष्यकारों (मुफ़सिरों) ने जब देखा कि खुदा पर दोषारोपण होता है तो उन्होंने (मकर अल्लाहो) के अर्थ "खुदाने इन लोगोंकी मकरकी खूब सजा दी" कर दिये परन्तु यह अत्यन्त अशुद्ध है।

सजा (दण्ड) और ज़जा 'पारितोषि' के अर्थ 'मकर अल्ला ही' मेंसे कदापि नहीं निकलते। यदि अरबी व्याकरणके नियमसे भी देखा जावे तो भी 'अल्ला ही' के अर्थ सजा 'दण्ड' नहीं होसक्ते।

मक्र सामान्य भूत है इसके रूप यों होंगे।

	एक वचन	दो.वचन	बहु वचन
पुल्लिंग अन्य पुरुष	उस एक आदमीने फरेब किया।	उन दो आदमियोंने फरेब किया।	उन बहुत आदमियों ने फरेब किया।
स्त्रीलिंग अन्य पुरुष	उस एक स्त्री ने फरेब किया	उन दो स्त्रियोंने फरेब किया।	उन बहुत स्त्रियोंने फरेब किया।
पुल्लिंग मध्यम पुरुष	तुमने फरेब किया।	तुम दोनोंने फरेब किया।	तुम सबने फरेब किया।
स्त्रीलिंग मध्यम पुरुष	उस स्त्रीने फरेब किया।	तुम दोनों स्त्रियों ने फरेब किया।	तुम सब स्त्रियोंने फरेब कियो।
पुल्लिंग व स्त्रीलिंग उत्तम पुरुष	मैंने फरेब किया।		हमने फरेब किया।

क्या यदि "मक्र (कपट) के अर्थ बहुबचन अन्य पुरुष पुल्लिङ्गमें-उन लोगोंने फरेब किया" हुये तो एक बचन अन्य पुरुष पुल्लिङ्गमें "उस आदमीने उन लोगोंको मक्रकी खूब सजादी" होंगे ? कदापि नहीं ! हां यदि "मक्र" के अर्थ "फरेबकी सजा देनेके लें" तो फिर हमें अन्य पुरुष बहुबचनमें भी वही लेने पड़ेंगे अर्थात् "उन आदमियोंने खूब फरेबकी सजा दी" और खुदाने भी उनको खूब फरेबकी सजा दी" [एक वचनमें] जो निपट अनुचित और बुद्धि वाह्य हैं ! क्योंकि इससे यह पता नहीं लग सकता कि उन आदमियोंने किसको फरेबकी सजा दी ? क्या पैगम्बरने प्रथम उनसे फरेब किया तो उन्होंने फरेबकी सजा दी या क्या ? सारांश यह है कि मक्र (कपट)" के अर्थ फरेबकी सजा देनेके कदापि नहीं हो सकते। मुफसिर (भाष्यकार)लोग जान बूझ कर अशुद्ध अर्थ कर रहे हैं। इसी प्रकार कितने हो और भी शब्द हैं कि जिनके अशुद्ध अर्थ किये हैं। केवल इस हेतुसे कि परमेश्वर (खुदा) पर जो मक्कार (कपटी) फरेब (छली) मखोलिया (मसखरा) और लड़ाका आदि दोष लगाये हैं वह धुलजावें परन्तु अशुद्ध अर्थ करनेसे दोष नहीं धुला करता है।

तफसीरें (कुरानके भाष्य) बहुधा विश्वास योग्य नहीं है। उनके ऐतिहासिक वृत्तोंको किन्हीं अंशोंमें सत्य माना जा सकता है यद्यपि इस विषयमें भी कुरानके भाष्यकरोंने बहुधा स्थलोंपर बड़ी २ अशुद्धियां की हैं।

क्योंकि मेरा अभिप्राय यहां पर कुरानका कोई नया भाष्य करके आप महाशयोंको दिखलाना नहीं है। अतएव मैं प्रत्येक विषय पर व्योरेवार बादविवाद से व्यर्थ समय नष्ट नहीं करना चाहता हूं भविष्य विषयोंमें केवल कुरानका प्रमाण मात्र देना ही उचित समझता हूं। यदि किसीको सन्देह हो तो वह कुरानसे देख सकता है।

सी० ३ सू० उमरान् अ० ५३।

[२] कुरानकी यह शिक्षा है कि "खुदा [परमेश्वर] फरेब करता है और धोखे बाजी करता है।" किसी भलेमानस आदमी पर जो सचमुच फरेबी न हो यदि यह दोष लगाया जावे तो पीछे पड़ जायगा और अदालत तक पहुंचेगा! परन्तु परमेश्वर पर फरेबबाजीका दोषारोपण करना किसी बड़े ही साहसी मनुष्य का काम हो सकता हैं। शोक कि मैं इस बातको स्वीकार नहीं कर सकता।

सी० ६ सू० अनफाल अ० ३०।

(३) कुरानकी यह शिक्षा है कि "खुदा [परमेश्वर] आत्मिक रोगियोंके आत्मिक रोगोंको जान बूझ कर बढ़ाता है और फिर ऊपरसे अजाब दुःख भी देता है।" निस्सन्देह यह बहुत बड़ी निर्दयता और अन्याय है कोई बुद्धिमान पढ़ा लिखा ईश्वरको ऐसा अन्यायी और निर्दई स्वीकार नहीं कर सकता है

सी० १ सू० बकर आ० १०।

(४) कुरानकी यह शिक्षा है कि "परमेश्वर बड़ा लड़ाका हैं"

भला जब ईश्वर ही लड़ाका होगया तो फिर पृथ्वी पर सम्मेलन और शान्ति कौन स्थिर कर सकता है। लड़ाका आदमी परमेश्वरको भी लड़ाका कह सकता है। परन्तु वह जो लड़ाईसे घृणा करता है। वह परमेश्वर पर ऐसा भयानक दोष आरोपण नहीं कर सकता। उचित था कि कुरानमें ईश्वरको इन बातों के साथ स्मरण न किया जाता। मुझे हार्दिक शोक है कि मैं कुरानकी इस शिक्षाको नहीं मान सकता।

सी० ५ सू० नसाय आ० ८४।

(५) कुरानकी यह शिक्षा है कि "परमेश्वर मनुष्योंमें वैर डाल देता है, प्रलयके दिन तक परस्परका द्वेष फैला देता है।" जिज्ञासू और ईश्वर प्रिय मनुष्योंके लिये इससे अधिक घृणित शिक्षा और क्या हो सकती है? कि जिस परमेश्वर को वह अपने जीवनका उद्देश्य और परम पिता समझता है उस पर ऐसे महान और दोषयुक्त धब्बे लगाये जावें, यदि द्वेष फैलानेवाले और वैर डालनेवाले मनुष्य परमेश्वरको भी द्वेष फैलाने वाला तथा वैर डालनेवाला समझें तो सम्भव है। परन्तु ईश्वर प्रिय, शुद्ध ईश्वर पर ऐसा दोषारोपण नहीं कर सकता।

सी० ६ सू० मायदा आ० १५।

(६) कुरानकी यह शिक्षा है कि "परमेश्वर न्यायकारी है परन्तु तोबाह [प्राश्चित्त] स्वीकार कर लेता है और पाप (गुनाह) क्षमा कर देता है।" भला न्याय और क्षमा (मुआफी) का मेल कहां? जहां मुआफी (क्षमा) आई न्याय दूर हुआ।

संसारका सर्व शक्तिमान् महाराज जिसको चाहे छोड़दे जिसको चाहे मार डाले ! परन्तु इससे वह न्यायकारी नहीं हो सक्ता ? ईश्वर विषयमें यह शिक्षा महान् विवादास्पद है ।

सी० २ सू० बकर आ० १६१ ।

(७) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्मा क्षमा करनेवाला (गफ्फार) है परन्तु कुरानको पढ़ते जाओ और नर्कके मनुष्यों के विलाप पर ध्यान दो कि किस प्रकार चिल्ला रहे हैं, ? क्षमा मांग रहे हैं और पछितावा कर रहे हैं, परन्तु परमेश्वरके कान बहरे होगये हैं, कुछ नहीं सुनता क्या परमेश्वरकी क्षमा यदि कोई पदार्थ है तो प्रलयके दिन उड़ जायगी ? और परमात्मा ढीठ होजायगा ।

ऐ चक्षु तू रक्तके आंसू बहा कि खुदाके विषयमें कुरानकी शिक्षा कैसी भद्दी है ।

सी० ५ सू० नसाय आ० ५५ ।

(८) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्मा बुराईको पसन्द नहीं करता, परन्तु कितनी लज्जाकी बात हैं कि उसको बदीका पैदा करनेवाला माना गया है। नादान लोग तकदीर और तदबीर और आजमायश आदिका ढकोसला बीचमें लाकर परमात्माको इस दोषसे बचाना चाहते हैं। परन्तु इससे उनका कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, जबतक कुरान उपस्थित है कुरानी परमात्मा इन दोषोंसे बच नहीं सक्ता ?

सी० ५ सू० नसाय आ० ७८

(९) कुरानकी यह शिक्षा है कि जो कुछ होता हैं परमात्माकी आज्ञासे होता हैं । तो फिर व्यभिचारी मनुष्योंका व्यभिचार, मदिरापान, डाका, चोरी, प्राणघात, हत्या, लूटमार, इत्यादि सब कार्य परमात्माकी आज्ञासे ही हुए शैतान बिचारेको क्यों कलङ्कित किया जाता है । शोक ! अज्ञानी पुरुषोंने परमात्माको क्या तमाशा बना दिया ।

सी० ११ सू० यूनुस आ० ४६

(१०) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्मा मनुष्योंके उपदेशके लिये नबी भेजता है। परन्तु कुरानमें स्थान २ पर देखोगे कि परमात्मा ही जान बूझ कर मनुष्योंको कुमार्गमें लेजा रहा हैं। और वह स्वयं ही इस बातका पक्षपाती माना गया हैं, "हां हम गुमराह करते हैं और जिसको हम गुमराह करते हैं उसको कोई राह नहीं दिखा सक्ता " भला फिर पैगम्बरोंके परिश्रम करनेकी क्या आवश्यक्ता और पुस्तकोंके भरमारका क्या प्रयोजन ? और शैतानोंको दोषी ठहरानेकी क्यों आवश्यक्ता पड़ी ।

सी० ६ सू० मायदा आ० ४५ ।

(११) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्मा पवित्रताको पसन्द करता है। परन्तु कुरानको पढ़नेसे पता लगता है कि 'खुदाने नापाक दिलको पाक न करना चाहा बल्कि नापाकीको और भी अधिक कर दिया और गुमराही सत्मार्ग विमुखता बढ़ा दी' बच्चोंका सा खेल हैं ! एक तुच्छ बातको स्थिर रखनेके

हेतु बहुत कुछ गढ़न्त करनी पड़ी परन्तु निष्प्रयोजन !

सी० ६ सू० मायदा आ० ४५

(१२) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्मा सब दोषोंसे रहित है, परन्तु देखिये शैतानको बहकाने वाला और गुमराह करने वाला (सत्मार्गसे भुलावा देने वाला) परमात्मा ही है हम शैतानी ढकोसलेसे कल्पना कर सकते हैं कि शैतान लोगों को बहकाता हैं, परन्तु शैतानका बहकाने वाला परमात्मा है ! शैतानने स्वयं परमात्माके सम्मुख कह दिया कि ऐ परमात्मा जिस प्रकार तूने मुझे भुलावा दिया मैं भी इसी प्रकार तेरे मनुष्योंको बहकाऊंगा !

परमात्मा शैतानकी इस बातको सुनकर केवल नर्ककी धमकी देकर चुप हो रहा और इस विषयमें मुख तक न खोला और यह न कह सका कि ऐ शैतान मैंने तुमको नहीं बहकाया ! कहता तो तब जब कि उसने भुलावा न दिया होता ! शोक कि परमात्माको कितना दूषित किया गया है कि मानो शैतानका शैतान बना दिया गया है ! ऐ हृदय तू रोदन कर और अपने भाइयोंके लिये आंसू बहा !

सी० ८ सू० एराफ आ० १६ ।

(१३) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्मा ठट्ठा मसखरी करने वालोंको पसन्द नहीं करता, परन्तु शोक ! वही परमात्मा ठठोरा, मसखरा, माना गया है। परमात्माको भङ्गरीनका भङ्गड़ी बना दिया ! जहां भङ्गड़ी भङ्ग पीकर एक दूसरेसे ठठोल

करते हैं। वहां परमात्मा भी बीचमें आ कूदता है और वैसाही भड़ुड़ीपन आरम्भ कर देता है, यह कितनी लज्जास्पद बात हैं कि परमात्मा मसखरा और ठठोर कहा जावे! परमात्मा पर ऐसे दोषारोपण वह पुरुष कर सक्ता है जो या तो नास्तिक हो या जिसने ईश्वरके भावको निपट न जाना हो। मुझे नहीं विदित कि मैं अपने मस्तिष्कको ऐसा रद्दी किस प्रकार बना लूं कि इस शिक्षाको मानने लग जाऊं कहांसे मैं अपने ऊपर द्वेषकी काली चद्दरें ओढ़ लूं कि परमेश्वर ठठोरा दृष्टि पड़ने लग जावे!

सी० १ सू० बकर आ० १५।

(१४) कुरानकी यह शिक्षा हैं कि परमेश्वर सौगन्द खाने-को अच्छा नहीं समझता, परन्तु कुरानके पृष्ठोंको पलटो देखोगे कि एक विश्वास रहित और झूठे पुरुषकी समान कि जिसकी बातका कोई भरोसा न करता हो, और विवश सौगन्द खाने पर उतारू होता हो, परमेश्वर घोड़ों, ऊंटों वृक्षों, पर्वतों, पुस्तकों वायु, सूर्य्य, चन्द्रमा, नक्षत्रों इत्यादि की अनेक बार सौगन्द खा रहा है, मानो इसकी बातका कोई विश्वास नहीं करता है, अतएव सौगन्द खाने पर विदित होता है! द्वितीय सौगन्द उस पदार्थकी खायी जाती है कि जिसको सौगन्द खाने वाला अपने से बड़ा प्रतिष्ठा योग्य तथा पूजनीय समझता है क्या घोड़े ऊंट, पहाड़, पत्थर इत्यादिको परमात्मा अपनेसे बड़ा समझ कर इनकी सौगन्ध खाता है? या कुछ और भेद है। आज कल

यदि कोई पुरुष अपने वर्णनको प्रमाणित ठहरानेके लिये, न्याया-लयमें अथवा पञ्चायतमें अपने घोड़े या ऊंट या पहाड़की सौगंद खावे तो उस पर हँसी उड़ाई जाती है। विदित नहीं कि अरबी परमात्माने अरब निवासियोंका अनुकरण क्यों किया? और जिन वस्तुओंको अरब निवासी सौगन्द खाते थे उनकी सौगन्द क्यों खाई! भारतवर्षके आम आलू आलूचे, गंगा यमुना और हिमालयकी सौगन्द क्यों न खाई यह केवल बालकोंको सुलानेके दुलरावका गीत (लोरी) है। और परमात्माका नाम बदनाम किया है। मैं इसके अतिरिक्त कि अपने भाइयोंके अर्थ आँसू बहाऊं और क्या कर सक्ता हूं।

सी० ३० सू० शम्स आ० १-६

(१५) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्मा "कुन" कहनेसे सब कुछ कर सक्ता है परन्तु क्या वह उन्मत हो गया था, वा अपनी "कुन" की शक्तिको भूल गया था कि उसने व्यर्थ पृथ्वी और आकाश बनानेमें छः दिवस लगा दिये "कुन" ही क्यों नहीं कह दिया या तीन दिनमें ही सब कुछ क्यों न बना दिया।

सी० १६ सू० मरयम आ० ३६

(१६) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्मा अति पवित्र परन्तु कुरानको पढ़नेसे विदित होता है कि उसकी आत्मा एक स्त्रीके गर्भाशयमें भी जासक्ती है और मासिक धर्मका रज खा-सक्ती है और नौ मास अपवित्रतामें पड़ी रह कर वर्षों तक मनुष्योंके शरीरमें बंधको प्राप्त होकर फांसी द्वारा मुक्त हो सक्ती

है। मुझे हार्दिक शोक है कि कुरानने बाइबिलका अनुकरण किया। सी० १७ सू० अम्बिया आ० ९१

(१७) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्मा पृथ्वी और आकाश पर सिंहासन आरूढ़ है मानो सब स्थानों पर उपस्थित और द्रष्टा है उसका कोई विशेष स्थान नहीं है। परन्तु आकाशके ऊपर अर्शको ८ फरिस्तोंका शिर पर उठाये हुए खड़े होना जबराईलका परमात्माकी ओरसे उतरना, महात्मा ईसाका आकाश पर उड़ जाना, अरबी पैगम्बरका बुराक (गदहा विशेष) पर सवार होकर आकाशकी सैर और परमात्मासे बातचीत कर आना, शैतानोंका आकाश पर जाकर छिप छिप कर परमात्मा और फरिस्तोंकी बातचीतका सुनना, और उन पर तारागण तोड़ कर मारे जाना इत्यादि २ क्या यह इस प्रकारके ढकोसले हैं कि जिनसे यह सावित हो सके कि परमात्मा पृथ्वी पर भी है यदि पृथ्वी पर भी होता तो फिर उपरोक्त ढकोसलोंकी क्या जरूरत थी। रोते हुए बालकको बहलानेके लिये यह कहानियां लाभकारी होसक्ती है परन्तु जिज्ञासू इनको परमात्माकी अपकीरति और अप्रशंसा समझता है निदान मैं अपने भाइयोंके अर्थ ईश्वरसे हार्दिक प्रार्थना करता हूं कि वह सत्यवेत्ता होसकें!

सी० ३ सू० बकर आ० २५५

(१८) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्मा मुशरिकों+से

+ एक परमेश्वरके साथ किसी औरको भी मिलाकर परमेश्वर मानने वाले पुरुषको 'मुशरिक' कहते हैं।

ोकातुर है मुशरिक अपवित्र हैं। परन्तु सबसे पूर्व खुदामें शिर्क' (प्रभुके साथ अन्यको मिलाने) की शिक्षा फरिस्तोंको ी कि आदमीको दण्डवत करो और जब एक फरिस्तेने परमात्माके सिवाय अन्यको माननेसे नाहीं की तो उसको मलाऊन* कर दिया। अब दण्ड किसको मिले शैतानको या परमात्माको ? मुशरिक कौन हुआ परमात्मा या शैतान !

सी० १ सू० वकर आ० ३४

(१६) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्मा किसीको नहीं सताता ! भला परमात्माने कुछ मनुष्योंके निमित्त कि जिन्होंने नूहका कहना न माना सर्व संसारको क्यों डुवो दिया ! और मनुष्योंने क्या पाप किया था ? पशुओंका क्या दोष था ? कि इन सबको भी तूफानमें डुवो दिया। और फि बढ़ २ कर बातें मारने लगा कि हमने नूहका तूफान उतार कर सबको डुवो दिया। क्या निरपराध पशुओं और मनुष्योंको डुवो देना, निर्दईका काम नहीं है तो और किसका है और निर्दईको जो दण्ड है वह प्रत्यक्ष है। अब परमात्माको नर्कमें डाला जावे या जिसने कि परमात्मा पर यह मनगढ़ंत दोषारोपण किये हैं उसको !

सी० १८ सू० मामिनून आ० २७

(२०) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्माने बहुधा मनु-

* ईश्वरके न्यायालयसे जो निन्दा करके निकाला जावे उसे 'मलाऊन' कहते हैं अभिप्राय 'शैतान' से है।

ष्योंके अन्तः करणों पर मुहर लगादी और कानों पर पर्दे डाल दिये कि वह उसकी बातको न समझ सकें परन्तु फिर उनको समझानेके लिये नबी भेजना निपट अज्ञानता है। और जबकि उसने स्वयं ही कानों पर मोहर लगादी तो दण्ड उनको क्यों चाहिये? परमात्मा स्वयं नर्कमें पड़े वा जो इस प्रकारकी फिलासफी (तत्वज्ञानकी पुस्तक) बनाता हो वह?

सी० १ सू वकर आ० ७

शोक! महाशोक! सत्यमार्गकी शिक्षा कहां?

(२१) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमात्मा किसीकी सिफारिश स्वीकार नहीं करता परन्तु तत्काल ही फिर कह दिया कि हां कतिपय पुरुषोंकी सिफारिश वह स्वीकार करेगा। भला सिफारिश और पापका क्या सम्बन्ध? कुरानी परमात्मा एक स्वतन्त्र नियम शून्य राजा है कि जिसके सम्मुख अपराधी लाये जाते हैं मन्त्री सिफारिश कर रहा है अन्य अधिकारी राज्यके अन्य कार्य्य भुगता रहे हैं और अच्छा औङ्गजेबी दरबार लगा हुआ है, खुदा करे कि मेरे भाइयोंकी आंखें खुले और सत्यताका प्रकाश दिखाई दे, उपरोक्त थोड़ी सी बातें कुरानी खुदाके सम्बन्धमें है जिनके पढ़नेसे इसका अनुमान हो सक्ता है कि वह क्या "बला" है और किस मस्तिष्कने उसको गढ़ा है क्या खुदा सम्बन्धी ऐसी शिक्षा आत्मिक शिक्षाका खून नहीं करती? क्या मक्कार, धोखेबाज, लुटेरे, झगड़ालूको रखनेवाले,

5341

मसखड़े, ठठोल; अन्यायी आदि गुणोंसे भूषित खुदाकी उपासना करनेसे हममें उपरोक्त अवगुण प्रवेश न करेंगे! और क्या हमारी आत्माका इससे खून न होगा? उपस्थित सज्जन! इसका स्वयम् उत्तर दें। खुदा सम्बन्धी यह शिक्षा उन सम्पूर्ण अच्छी बातों पर भी कलङ्क लगाती है जो कुरानमें कहीं २ रेतीले जंगलके वृक्ष कुंजकी भांति लिखी है यही नहीं कि कुरान खुदाकी पुस्तक होनेके दरजेसे गिर जाता है किन्तु वह एक साधारण पुस्तकसे भी नीचे हो जाता है—

सी० ३ सू० बकर आ० २५५

इसके सिवाय दूसरी बात जो कुरानकी शिक्षामें अस्वीकार करने योग्य है वह मनुष्योत्पत्ति है मुझे शोकके साथ कहना पड़ता है कि बाइबिलसे ली हुई कहानियोंका नाम खुदाई वाणी रख दिया गया है। आदमकी कहानी जो बाईबिलमें है उसी को कुछ हेर फेर करके कुरानमें लिखा गया है-कुरानी बाबा आदम कोई नई बला नहीं है किन्तु उसकी कहानी बच्चा बच्चा जानता है-मैं इस बातको आदर्श बनाकर कि ऐसी झूठी बातोंका एक खुदाई पुस्तकका दम भरनेवाली पुस्तकमें होना अयोग्य है कुछ बातें नीचे लिखता हूं—

(२२) कुरानकी यह शिक्षा है कि ईश्वरने आदमको मिट्टीसे बनाया और उसमें जीवन डाला अर्थात् प्रथम एक मिट्टीका पुतला बनाया और फिर उसमें आत्माका प्रवेश किया गया वह आत्मा कहांसे आई? यदि हम यह कहें कि ईश्वरने अपनी

आत्मा उसमें डाली तो मानना पड़ेगा कि ईश्वरमें भी वह अवगुण हैं जो उसके एक आत्मामें (जो आदममें आया) थे यदि यह कहें कि ईश्वरने अभावसे भाव (आत्मा) उत्पन्न किया तो यह सर्वथा झूठ हैं-क्योंकि अभावसे भाव नहीं हो सक्ता अभाव नामही उस वस्तुका है कि जिसका कोई स्तित्व नहीं हो सक्ता, अतएव कुरानकी इस शिक्षाको मैं स्वीकार नहीं कर सक्ता !

सी० १४ सू० हजर आ० २८-२६ ।

(२८) कुरानकी यह शिक्षा है कि ईश्वरने आदमसे उसकी बीबीको उत्पन्न किया परन्तु यह स्पष्ट नहीं कि वह उससे किस प्रकार पैदा की गई भला आदम (के पेट) में स्त्रियोंकी भांति गर्भाशय था यदि था और उससे उत्पत्ति हुई तो वीर्य्य कहांसे आया ईश्वरके यहांसे गिरा अथवा किसी फरिशतेने आदममें गर्भ स्थापित किया और क्या फिर एक बीबीको उत्पन्न करके आदमका गर्भाशय गुम होगयो अधिक सन्तान उससे क्यों न पैदा हुई ? इस दशामें आदमको हम पुरुष कहें अथवा स्त्री ? यदि पुरुष तो उसके पेटसे उसकी बीबी किस प्रकार उत्पन्न हुई ? यदि स्त्री तो फिर उसको एक और स्त्रीकी क्या आवश्यकता ? यदि हम यह कहें कि आदम गर्भाशय रहित तो था परंतु उसकी बीबी उसकी पसलीसे उत्पन्न की गई यह भी हंसी की बात है और भला ईश्वरको आदमकी पसली तोड़नेकी क्या आवश्यकता थी? मिट्टी शेष नहीं रही थी या ईश्वर आदमका

पुतला बनाकर ही भूल गया था अथवा दूसरा पुतला बनाना ही भूल गया था ? जिस प्रकार एक पुतला बनाया था उसी प्रकार उसीके साथ उसकी स्त्रीका पुतला भी तय्यार करके उसमें भी फूंक भर देता। इसके अतिरिक्त ईश्वरके स्मरण शक्तिके अच्छे न होनेका हेतु भी देखो जब ईश्वरने बाइबिल उतारा तो वहां ही आदमकी बीबीका नाम बता दिया परन्तु कुरानमें नाम बताना भी भूल गया सम्भव है कि यह इसलिये हो कि जहां बाइबिलसे और बहुत सी बातें कुरानानुयायी पुरुषोंको मिलेंगी वहां आदमकी स्त्रीका नाम भी मिल जायगा। ईश्वर मेरे भाइयोंके हृदयमें सत्यका प्रकाश करे !

सी० २३ सू० जुगर आ० ५।

(२४) कुरानकी यह शिक्षा है कि-खुदाने आदमको उसकी स्त्री सहित बैकुण्ठमें रख दिया कि भली भांति खाओ, पियो परन्तु इस वृक्षके पास मत जाना-पापी होजाओगे-हमें कुरानसे अनार अंगुर, जैतून, केले आदि वृक्षोंके नाम तो मिलते हैं परन्तु उस वृक्षका नाम कहीं नहीं मिलता जिसके पास जानेकी मनाई की गई थी-इसके लिये फिर हमें बाइबिल खोजनी पड़ती हैं क्योंकि वह कुरानकी अपेक्षा अधिक प्रमाणिक तथा प्राचीन है सम्भव है कि जब ईश्वरने बाईबिल उतारी उस समय वह वृक्ष हो और जब कुरान उतारा तो उस समय उसका नाश हो चुका हो ! यहां तक कि उसका नाम भी लोहे महफूज (संरक्षित पटिका) से घिस कर मिट गया हो ! चैतनाप्रिय पुरुष पूछ

सकता है कि जब आदम सस्त्रीक बहिश्तका स्वाद ले रहे थे तो उस समय वहांकी हूरें (अप्सरायें) तथा गिलमान (बिना डाढ़ी मूंछके लड़के) कहां थे ? उनको आदमके साथ नीचे क्यों न फेंका ? अथवा हूरें तथा गिलमान उत्पन्न ही उस समय किये गये जब कि आदमकी कहानी तमाम हो चुकी थी और जबराईल (एक मुसलमानी फिरिस्तेका नाम) अरबके रेतीले मैदानोंमें पर मारता उड़ता हुआ अरबियोंको हूरोंके मिलनेका सुसमाचार सुनाकर लड़ाईके लिये उकसा रहा था ! मेरे विचार में हूरें केवल कुरानी बेवा हैं कुरान ही के साथ इनकी उत्पत्ति हुई और उसके साथ ही वह समाप्त हो जावेंगी परन्तु शोक कि कितने मेरे नासमझ भाई ऐसे हैं जो हूरोंके पीछे मर रहे हैं। भाइयों ! हूरें केवल "मनमोदक" हैं आप सत्यप्रिय बनें।

सी० १ सू० वकर आ० ३५

(२५) कुरानकी यह शिक्षा है कि आदम सस्त्रीक बहिश्तसे निकाला गया और पृथ्वी पर फेंका गया इत्यादि २ जिसका न शिर है न पैर है, कहींकी ईंट कहींका रोड़ा इकट्ठा कर दिया गया है ! बाईबिलके पढ़नेसे बाबा आदमकी कहानी न्यूनसे न्यून एक क्रमबद्ध कहानी प्रतीत होती है परन्तु कुरानमें क्रम भी नहीं है बीसों वार आदमकी कहानी आरम्भ की गई है। परन्तु दो तीन बातोंके दुहरानेके अतिरिक्त और कुछ मस्तिष्क-के भीतरसे नहीं निकल सका। निदान मनुष्य मनुष्य ही है इतनी बातें जो प्रतिदिन सुनी जाती है उनमेंसे किस २ को

याद रक्खें जो याद रह गई वह स्वप्नमें दिखाई दे गई। प्रति-फल यह कि आदम और उसकी स्त्रीकी कहानी बाईबिलके संग्रहमें देखनेकी जगह स्वयं बाईबिल हीमें देख सकते हैं। वहां सविस्तार वर्णन किया गया है-वह अन्धकारका समय अब शेष नहीं रहा जबकि इस प्रकारकी अनर्गल कहानियोंको सुना कर लोगोंको श्रद्धालू बना लिया जाता था, अब लोग ऐसे ढकोसलोंको स्वीकार करनेके लिये तय्यार नहीं हैं। चाहें इन फटी पुरानी कहानियों पर प्रकाशका मुलम्मा भी चढ़ा दिया जावे। इसके अतिरिक्त प्रलयके सम्बन्धमें कुरानकी शिक्षाको मैं स्वीकार नहीं कर सकता। मेरे कितने ही भाई हैं जो आंखे बन्द करके उसको सत्य मानते हैं। परन्तु मुझे हार्दिक शोक है कि मैं उनसे सहमत नहीं हो सकता।

सी० १ सू० बकर आ० ३५

(२६) कुरानकी यह शिक्षा है कि एक दिन नरसिंगा बजाया जावेगा तमाम प्राणी मर जावेंगे। यह अज्ञात है कि यह नरसिंगा कहां फूंका जावेगा और उसका नाद सम्पूर्ण पृथिवी पर एक साथ किस प्रकार पहुंचेगा। और समस्त प्राणी एक साथ किस प्रकार नाश हो जावेंगे तथा यह बातें कब होंगी ? और फिर खुद सकल सृष्टिका नाश करके कुछको सदाके लिये बैकुण्ठमें और कुछको सदाके लिये नर्कके घोर दुःखोंमें डालकर आप सदाके लिये निपट बेकार होजावेगा और संसारके झगड़ोंसे मुक्त होकर सो रहेगा अथवा क्या करेगा ?

शोक है कि मैं प्रलयके नरसिंगे आदिको स्वीकार नहीं कर सकता।

सी० ३० सू० बिना आ० १८

(२७) कुरानकी शिक्षा यह है कि खुदा फिरिश्तोंकी लैन बांध कर प्रलयके मैदानमें आवेगा उसके तख्तको ८ फिरिश्ते उठाये हुए होंगे। भला यदि खुदा तथा अर्श साकार तथा सीमा वाली वस्तुयें नहीं हैं तो फिर उसके उठानेके लिये साकार फिरिश्तोंका होना क्यों है? यदि कोई कहे कि फिरिश्ते भी साकार नहीं हैं तो जबराईल, मैकाईल आदिके पर तथा शरीरका वर्णन करनेकी क्या आवश्यकता थी? मरियमके पास मनुष्य की आकृतिमें फिरिश्ता भेजनेका क्या अर्थ हो सकता है। कुरानकी शिक्षासे फिरिश्ते साकार सिद्ध होते हैं! इसी प्रकार खुदा भी जो अर्श पर बैठा हुआ आज्ञायें जारी कर रहा है और कभी २ अग्निकी आकृतिमें पहाड़ों तथा मैदानोंमें भी उतरता है।

सी० १७ सू० अम्बिया आ० १०४

(२८) कुरानकी यह शिक्षा है कि मुर्दे जाग उठेंगे, यह आश्चर्य जनक वार्ता है कि घास पातकी भांति मुर्दोंसे शिर निकालेंगे! भला जो जला दिये गये, जिनकी राख नदियोंमें बहा दी गई, जिनको सिंह भेड़िये खा गये, वह कबरोंमें से क्यों कर उत्पन्न हो जावेंगे! बहुधा मुसलमान शरीरोंका जीवित होना नहीं मानते, परन्तु कुरानमें अनेक स्थलों पर शरीरोंके जीवित होनेके उदाहरण देकर समझाया गया है कि लोग इस

पर विश्वास करें कि उनके शरीर फिर जीवित किये जावेंगे।

सी० ३० सू० फज्र आ० २२

(२६) कुरानकी यह शिक्षा है कि खुदा तराजू लगा कर बैठेगा और लोगोंके अच्छे बुरे कर्मोंको तौलेगा और स्वर्गमें जाने वालोंको उनके कर्म पत्र दायें हाथमें और नर्कमें प्रवेश करने वालोंके बायें हाथमें देगा। यह ज्ञात नहीं होता कि खुदा को दुकानदारोंकी भांति तखरी बाटोंकी क्या आवश्यकता पड़ेगी? भला कर्म भी कोई ठोस वस्तु है, कि जिनको तोल लिया जायगा? कर्मोंका तोलना ठीक वैसा ही है जैसे कोई पुरुष तखरी बाटोंके साथ अपने बहमी ख्यालातको तोलने लग जावे जो सर्वथा पागलपन है। ईश्वर यदि सर्वज्ञ है तो शीघ्र ही उसे सबको बतला देना चाहिये कि तुम्हारे यह २ कर्म हैं, निस्प्रयोजन दुःख उठानेकी क्या आवश्यकता है।

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ४७

(३०) कुरानकी यह शिक्षा है कि प्रलयके दिन पहाड़ रुई की तरह उड़ते फिरेंगे। गप भी यदि मारी जावे तो कुछ बढ़ कर! भला हिमालय पहाड़ जो कई सौ मील लम्बा तथा कितने ही मील चौड़ा है उड़ कर कहां जावेगा? उधर अमरीका तथा योरुपके पहाड़ रुईकी भांति उड़कर किस आकाशमें पहुंचेंगे?

सी० ३० सू० अलवारअ आ० ५

(३१) कुरानकी यह शिक्षा है कि प्रलयके दिन चन्द्रमा

सूर्यसे जा मिलेगा, परन्तु अन्य ग्रह जो सूर्य तथा चन्द्रमासे भी बड़े हैं वह कहां जावेंगे ! उन नक्षत्रोंका कहीं ईश्वरने नाम तक नहीं लिया। क्या इस लिये कि अरबके लोग उस समय तक उनके नामसे अनभिज्ञ थे।

सी २६ सू० क्यामत आ० ६

(३२) कुरानकी यह शिक्षा है कि सितारे गिर पड़ेंगे। भला वह गिर कर कहां जावेंगे। क्या पृथिवी पर आजावेंगे? यदि हां ! तो पृथिवी पर इतने ग्रहोंके लिये स्थान कहां होगा ! और जब खुदा पृथिवीको भी लपेट लेगा, तो फिर ग्रह किधर भागेंगे? मैं इस बातको स्वीकार नहीं कर सकता।

सी० ३० सू० इन्कतार आ० २

(३३) कुरानकी यह शिक्षा है कि प्रलयके दिन पृथिवी बातें करेगी और ईश्वरको अपनी सारी कहानी सुनावेगी, परन्तु यह ज्ञात नहीं कि सूर्य तथा चन्द्रमा क्यों बातें नहीं करेंगे ! अन्य ग्रह क्यों चुप रहेंगे? यह सब विद्याहीन पुरुषोंकी बातें हैं जिनको स्वीकार नहीं कर सकता।

सी० ३० सू० जुल जाल ४। ५

(३४) कुरानकी शिक्षा है कि प्रलयके दिन ईश्वर लोगोंके मुख पर तो मुहर लगा देगा और उनके हाथ, पांव, कान और त्वचा आदि बोलेंगे और मनुष्यके कर्मोंको बतावेंगे ! मनुष्य उनकी इस क्रूरताको देखकर कहेगा कि तुम मेरे विपरीत साक्षी क्यों देते हो ! यह बड़ी आश्चर्य युक्त बात है कि मनुष्यके हाथ

पांव आदि जिह्वाका कार्य्य करेंगे ! मैं इसको नहीं मान सक्ता !

सी० २४ सू० हमसिजदा आ० २०-२१

उपरोक्त प्रलय सम्बन्धी ढकोसलोंको छोड़कर स्वर्ग सम्बन्धी कुरानकी शिक्षा और भी कुत्सित और घिनावनी है। सच पूछो तो कुरानकी शिक्षाने स्वर्गको ऐसा बुरा घर बना दिया है कि जहां जाना भलेमान्सोंका काम तो कदापि नहीं है, परन्तु कितने ही मूर्ख लोग स्वर्गकी बात ठीक मानकर रात दिन उसकी प्राप्तिकी प्रार्थना करते हैं ! और मन गढ़न्त बातोंका आखेट बनकर वास्तविक सचाईको हाथसे गमा बैठे हैं ! कुरानी स्वर्ग क्या वस्तु है ? इसका कुछ चित्र खींचकर आपके सन्मुख उपस्थित करता हूं।

(३१) कुरानकी यह शिक्षा है कि अच्छे कर्म्म करो जिससे सदैवके लिये स्वर्गमें जाओ जहां दुःखका लेश मात्र भी नहीं है। प्रथम तो यही विवादास्पद है कि मनुष्य कदापि एक दशामें रहना स्वीकार नहीं कर सकता है ? यदि इसको नित्य सुख प्राप्त हो जावे तो वह प्रसन्नता इसको उसी प्रकार दुःखदाई हो जायगी जिस प्रकार बनी इसराईल (मूसाके अनुयायी लोगों) के लिये 'मन' (एक खानेका पदार्थ जो बनी इसराईलके लिये आकाशसे गिरता था) तथा बटेर हो गई, जिनके बदले उन्होंने ईश्वरसे लहसन पियाज मौंठ तथा मूंगकी दाल मांगी ! स्वर्ग वासी लोग जब वहांके अच्छे २ भोजन खाते २ थक जावेंगे तो उनको नर्ककी आकांक्षा करनी पड़ेगी, विशेष कर जब कि इस

स्वर्गमें निम्न पदार्थ होंगे !

सी० १ सू० वकर आ० ८१ ॥

(३६) कुरानकी यह शिक्षा है कि स्वर्गमें पीनेके लिये शराब तथा खानेके लिये कबाब मिलेंगे। वाह ! शराब तथा कबाबका क्या अच्छा जोड़ मिलाया है ! भला पशु जो बध किये जावेंगे उनका रक्त कहां गिरेगा ! यदि बिना बध किए ही पशु पक्षी आदि भून लिये जावेंगे तो क्या वह (हराम) त्याज्य न होंगे ! शोक है कि मेरे कितने ही भाई केवल शराबके प्यालों तथा पशु पक्षियोंके मांसके लिये नुमाज रोजे हज तथा जकात (दान) आदि कार्य्य करनेका कष्ट उठा रहे हैं।

सी० २७ सू० वाकआ आ० १८-२१

(३७) कुरानकी यह शिक्षा है कि स्वर्गमें रेशमी कपड़े पहिननेको मिलेंगे पाठकगण रेशमके साथ आपके सम्मुख शीघ्र ही रेशमके कीड़ों, शहशूतके वृक्षों तथा कपड़ा बुन्नेकी कलोंका चित्र आसक्ता है, इतना सामान स्वर्गमें कहांसे आवेगा और इतने रेशमी कपड़े कौन बुनेगा क्या खुदा बुनेगा ? यदि नहीं तो स्वर्गके कुछ मनुष्य बुनेंगे ? यदि हां ! तो फिर वहां भी उनको साधारण मजदूरोंकी भाँति सेवा करनी पड़ेगी। विशेषता क्या हुई ? शोक है मेरे भाई रेशमी कीड़ोंके थूक आदिसे बने हुये कपड़ोंके आसक्त होकर कितने धोकेमें फँस रहे हैं !

सी २९ सू० दहर आ १२-१३ ॥

(३८) कुरानकी यह शिक्षा है कि स्वर्गमें दूध तथा शहद

की नहरें होंगी। भला यदि दूध और शहदकी नहरें होंगी तो दूधके लिये भैंसों तथा शहदके लिये मक्खियोंकी भी आवश्यकता पड़सक्ती है, जो एक साधारण बात है।

सी० २६ सू० मोहम्मद आ० १६

(३६) कुरानके भाष्यकारोंने तो यहां तक गप्प हांकी है कि जो मनुष्य एक बार 'कौसर' तथा 'तसनीम' (स्वर्गकी नहरों) से पानी पी लेगा, उसको फिर कभी प्यास नहीं लगेगी यदि प्यास नहीं लगेगी तो फिर नहरोंके रखनेसे क्या लाभ ? यदि यह कहाजावे कि स्नानके लिये तो कौनसा बुद्धिमान पुरुष है जो शरबत, शहद तथा दूधसे स्नान करेगा ! शोक है कि नहरों का पानी पीनेके लिये भलाई कीजावे ।

(४०) कुरानकी यह शिक्षा है कि स्वर्गमें निवास करने वालोंको सोने तथा चांदीके कंगन पहनाये जावेंगे। भला यह कौनसी सभ्यता है कि स्त्रियोंका आभूषण (गहना) पुरुष पहनने लगें।

सी० १५ सू० कहफ आ० ३२

भला विचारिये तो कि यदि एक पढ़ा लिखा बी. ए० एम० ए० अथवा कोई मौलबी साहिब ही कगनोंकी जोड़ी पहन कर बाजारमें फिरें तो उसको कितनी लज्जा आवेगी और लोग उसका कितना ठठोल मचावेंगे क्या स्वर्गमें जानेसे यह लज्जा जाती रहेगी ? और क्या हमारे इस समयके बड़े २ सुधारकगण जो आभूषण पहननेसे कतराते हैं, वहां हीजरों तथा स्त्रियोंकी

भांति कंगन पहन कर फिरा करेंगे कंगन बनानेके लिये सोना चांदी सुनार कोयला तथा भट्ठी आदिकी भी आवश्यकता पड़ेगी वा खुदा स्वयं बनाकर दे दिया करेगा कितने ही मेरे भाई सोने चांदीके कंगन पहननेके लिये नमाज रोजे हज तथा जकात आदि करते हैं शोकका स्थल है कि कंगनोंकी जोड़ीके लिये सेवा की जावे ।

(४१) कुरानकी यह शिक्षा है कि स्वर्गमें लोगोंको गोरी क्वारी युवा तथा काली आंखों वाली स्त्रियां मिलेंगी। उपस्थित गण जिस प्रयोजनके लिये यह होंगी वह आप स्वयम् ही समझ सकते हैं। ब्रह्मचारी इस प्रकार अश्लील बातोंको मुंह पर लाना भी महान पाप समझता है। शोक ! शोक !! शत शोक !!! उत्तम हो कि स्वर्गके स्थानमें लाहोरका अनारकली बाजार (भले मानस आदमियोंको उससे निकालकर) रख दिया जावे छी ! छी !! नुमाज रोजे और अन्य कार्य किस ओर बह रहे हैं और क्या पदार्थ (सौदा) क्रय कर रहे हैं ? यदि मैं अपने भाइयोंकी ऐसी शिक्षा पर चार २ आंसू बहाऊं और इनका स्वर्गके दुर्व्यसनोंसे बचानेके लिये रोदन करूं तो यह मेरा मुख्य कर्त्तव्य हैं।

सी० २७ सू० रहमान आ० ५५-७२

(४२) कुरानकी यह शिक्षा है कि स्वर्गवालोंको लड़के भी मिलेंगे जो बिना डाढ़ी मूंछके युवा होंगे। मेरी समझमें नहीं आता कि लड़कोंकी वहां क्या आवश्यकता है ? लड़के किनको

मिलेंगे पुरुषको अथवा स्त्रियोंको ? न्याय तो यही चाहता है कि जब एक २ पुरुषको बहुत सी हूरें मिलेंगी तो एक २ स्त्रीको बहुतसे युवा लड़के मिलने चाहिये। परन्तु कुरानसे इसका निवटारा नहीं है बुद्धिमान तथा न्यायप्रिय पुरुष स्वयम् इसका निवटारा कर सकते हैं मैं खुदासे प्रार्थी हूं कि वह सबको उपरोक्त स्वर्गसे बचावें।

सी० २६ सू० दहर १६

उपस्थित गण! मेरी हार्दिक प्रार्थनाका साथ दें वरन् एक पग आगे बढ़ावें-मैं आपको बताऊंगा कि उपरोक्त स्वर्गके अतिरिक्त कुरानकी शिक्षा मनुष्यको दयालु कदापि नहीं बना सकती क्योंकि जहां मांस भक्षण और बलिप्रदान है वहां दयाका भाव कहां? और इस कारण आत्मिक शिक्षाका भी अभाव है। कुरानकी शिक्षामें से किसी ने मेरे कोमल हृदय पर इतनी चोट नहीं पहुंचाई जितनी की मांस भक्षण और बलीप्रदानकी शिक्षा ने। यदि आपमेंसे कोई पुरुष मुझसे प्रश्न करें कि संसारमें आत्माका नष्ट करने वाला सबसे बड़ा पाप कौनसा है तो मैं शीघ्र ही उत्तर दे दूंगा कि मांस भक्षण महान् पाप है। जो आत्मोन्नतिके मार्गमें सबसे बढ़कर रोक बनाता है जिस हृदयके पास ही पेटमें मांस के टुकड़े पड़े हैं और हड्डियोंका रस भरा हुआ है वहां आत्मिक तेज कहां है? मांसका टुकड़ा भीतर गया और आत्मिक शिक्षाका भाव बाहर हुआ। यदि कोई पुरुष मेरे पास आकर कहे कि अमुक स्थानपर सुईके छेदमेंसे हाथी

निकल गया तो कदाचित् मैं इसको सत्य मानलूं परन्तु यदि कोई आकर यह कहे कि अमुक स्थानपर एक मांस भक्षकने औलिया अल्लाह (ईश्वर प्राप्तिका आनन्द अनुभव करने वाला) अथवा पैगम्बर होकर, आत्माके मर्मको जान लिया तो मैं इसको कदापि स्वीकार नहीं करूंगा। पत्थर है वह हृदय जो निरपराधी बकरीकी बिलबलाहटको जो वह हनन किये जानेके समय करती है सुनकर पिघल नहीं जाता? वहां आत्मिक शिक्षाका बीज कदाप नहीं उग सकता। मेरा हृदय दुःखसे भर आता है जब कि मैं एक निरपराधिनी तथा जिह्वा रहित बकरीकी आंसू भरी आंखोंको कसाई की छुरी पर लगी हुई देखता हूं! जब कि मैं कसाईको दोनों घुटने बकरीके तड़पते हुए शरीरपर रक्खें हुए और गले पर छुरी चलाते हुए देखता हूं। क्या लोहेकी शलाकाओं में हरे पत्ते लग सकते हैं? क्या कसाई और मांस भक्षक पुरुषके हृदय कभी आत्मिक शिक्षाकी हरियाली से हरा भरा हो सकता है नहीं! कदापि नहीं! यदि कोई मांस भक्षक आत्मिक शिक्षाका दम भरे तो उसको कह देना चाहिये कि सिंह तथा बृक (भेड़िये) आत्मिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते!

दया जिसको धर्मका मूल कहा गया है हड्डी चूसने वालोंके हृदयसे उतनी दूर रहती है जितनी दूर सूर्यसे पृथ्वी सूर्यकी किरणे पृथ्वी पर पड़ सक्ती हैं परन्तु दयाकी किरण हड्डी चूसने के हृदयसे सदैव दूर रहती हैं। इस लिये वह दयावान अथवा

धार्मिक कदापि नहीं हो सकता। मुझे हार्दिक शोकके साथ कहना पड़ता है कि कुरान मांस भक्षण तथा बलिप्रदानकी शिक्षा देता हैं मेरा हृदय रोदन करता है जब मैं बकरीके कण्ठ और कसाईकी छुरीको स्वर्ग प्राप्तिके लिये कुरानमें पृष्ठोंमें लिखा हुआ पाता हूं उपस्थितगण देखें।

(४३) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाके नामपर पशु बध करो उसका मांस आप खाओ अन्योंको खिलाओ कुरानके कुछ भाष्यकारोंने तो यहां तक भी वर्णन किया है कि जो पुरुष इस संसारमें पशुओंका बलिप्रदान करते हैं वह प्रलयके दिन उनके कन्धों पर चढ़ कर (बैतरणीको इस प्रकार पार कर जावेंगे जिस प्रकार बिजली ! ईदुज्जुहा (मुसलमानी त्योहार) के दिन किसी मसजिदमें जाकर खुतबा (उपदेश) सुनियेः—'भा.यो ! धन्यवाद दो कि ईश्वरने तुमसे दुम्बाभेड़ बकरी आदि कीही कुरबानी लेनी स्वीकार की है ! यदि इस्माईलका बध हो जाता तो आज प्रत्येक मुसलमानको अपने बड़े बेटेका बलि प्रदान करना पड़ता इत्यादि २ लम्बी चौड़ी कहानी सुनाई जाती हैं सुनने वालोंको भी धन्यवाद है ! कह देते हैं। परन्तु आप किञ्चित विचार तो करिये कि पशुओंका हनन करना कहां और मोक्ष कहां है ? शोक ! महा शोक ! पशुवृत्ति तथा दुर्व्यसनोंके वर्षोंके पाले हुये भीतरके बकरे आत्मिक शिक्षाके भावकी हरियालीको दिन रात चर रहे हैं, उनको तो हनन न किया जावे, किन्तु निरपराधी जो घास पात खाने वाले भेड़, बकरी तथा

गोय आदि लाभ दायक पशुओंका बध करके चित्तकी वृत्तियोंको और भी दुर्व्यसनोंकी ओर लगाया जावे।

ईश्वर करे कि मुसलमानो तुम सच्चा बलिप्रदान कर सको। भेड़, बकरी, गाय तथा ऊंट आदिके हनन करनेके स्थानमें तुम अपने मनकी कुत्सित चञ्चल वृत्तियोंका हनन करके ईश्वरके न्यायालयमें उपस्थित करके ऋषियों तथा मुनियोंकी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सको जब कि ईश्वर मांस चर्म तथा रक्त पान नहीं करता तो फिर रक्त क्यों बहाते हो। हृदयकी पवित्रताको उसके सम्मुख भेट करो।

सी० १७ सू० हज्ज आ० ३४-३७

(४४) कुरानमें शिक्षा है कि मरे हुये सूकर तथा रक्त अभक्ष्य है। परन्तु विचार करिये कि मरा हुआ किसे कहते हैं वह जिसमें प्राण निकल गये हों-चाहे लाठी मारनेसे चाहे छुरीके आघातसे। शैतानका नाम लेकर हनन किया गया हो अथवा ईश्वरका नाम लेनेसे काटा गया हो परन्तु मुरदार वह है जिसमें अब प्राण नहीं है। क्या ईश्वरका नाम लेनेसे यदि एक पशु वध किया जावे तो वह मुरदार अथवा प्राणरहित न हो जावेगा फिर वह हराम क्यों न हुआ? फिर देखिये कि रक्त अभक्ष्य है मैं आपसे पूछता हूं कि यदि रक्त अभक्ष्य हैं तो मांस क्यों भक्ष्य होगया? वह भी सर्वथा अभक्ष्य हुआ क्योंकि वह भी तो रक्त हीसे बनता है। किञ्चिद् ध्यान दीजिये मादाके गर्भाशयमें वीर्य्य उसके रक्तसे पलता हैं उसकी सम्पूर्ण हड्डी, पसली, मांस,

त्वचा, रक्त एक २ बिन्दुसे बनती हैं और सम्पूण शरार रक्त हा से पलता है हड्डी रक्तसे बनती है त्वचा तथा मांस भी रक्तसे, चरबी भी रक्तसे और स्वच्छ रक्तसे, यह नहीं कि खानेमें हड्डी तथा चरबी आदि पृथक् २ उपस्थित होती है, पेटमें जाकर हड्डी हड्डीके साथ और मांस मांसके साथ जा मिलता हो नहीं वरन् पहले रक्त बनता है, फिर रक्तसे अन्य अवयव बनते हैं यदि रक्त से अभक्ष्य हो गया तो मांस उससे भी बढ़कर अभक्ष्य हुआ क्योंकि वह रक्तका जमा हुआ सत हैं। परन्तु मेरे भाइयोंको यह बात कौन समझावे। वहां तो पक्षपातका डेरा जमा हुआ है, किसीकी शक्ति क्या कि वह उसके विपरीत कुछ कह सके? फिर पूछिये कि सुअर क्यों अभक्ष्य है? क्या इसलिये कि वह अपवित्र भक्षी है? यदि यही कारण है तो मुरगे मुरगियां तथा भेड़ें भी अभक्ष्य होनी चाहियें। जो अपवित्र खाने वाले हैं अथवा इस लिये कि वह अधिक मैथुन प्रिय है-उसके मांससे काम शक्ति अधिक उत्पन्न होती है? तो फिर मुरगे तथा बकरों-से बढ़कर कौनसे पशु अधिक कामप्रिय हैं वे भी अभक्ष्य होने चाहियें, मुझे कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि सुअर क्यों अभक्ष्य समझा जावे तथा अन्य पशु क्यों भक्ष्य समझे जावें।

सी० ६ सू० मायदा आ० ४

(४५) कुरानकी शिक्षा है कि रुधिर अभक्ष्य है। यहां तक कि यदि उसकी बूंद कपड़े पर लग जावे तो वह अपवित्र हो जाता है। तो क्या जमा हुआ रुधिर अर्थात् मांस खानेसे

देह आत्मा अपवित्र नहीं होंगे। शोक हैं कि शरीर और आत्माको कपड़ेसे भी निकृष्ट समझा जावे।

सी० ६ सू० मायदा ४।

(४६) कुरानकी शिक्षा है कि बैतअल्लाह अर्थात् काबेके घरमें जो पवित्र स्थान माना गया है, रुधिर मत गिराओ क्या खुदाका घर अरबके एक कोनेकी चतुर्दिग सीमा तक ही है? और शेष संसार शैतानका घर है? कोई कारण विदित नहीं होता कि इस घरमें तो लोहू गिराना वर्जित किया जावे और दूसरे स्थानोंमें उचित समझा जावे। इससे तो यह सिद्ध होता है कि खुदा एक स्थानीय है और अरबके एक कोनेमें अपना घर रखता है। शोक है! उन मनुष्योंकी बुद्धि पर जो सारे संसारको ईश्वरका घर न समझ कर पशुओंके रुधिरसे उसको अपवित्र कर रहें हैं। वह दिन कब आयेगा जब कि निर्दोष भेड़ बकरीके बच्चोंका शोक जनक शब्द जो वह बध होते समय निकालता है मेरे भाइयोंके हृदयोंको इस प्रकार क्लेशित और अधीर कर देगा, जैसा कि उनके एक प्यारे बच्चे की बिलबिलाहट जिसका गला ईश्वर न करे कोई छुरीसे काट रहा हो। सी० ७ सू० मायदा आ० ६७

(४७) कुरानकी शिक्षा है कि अहरामके दिनोंमें आखेट करना और किसी पशुका मारना त्याज्य है। अहराम उन दिनोंको कहते हैं जबकि हाजी लोग खुदाके घरको यात्रा करने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं परन्तु क्या केवल अरबी मासकी

विशेष तिथि नियत हो सकती है जबकि मनुष्यको निर्दोष हो जाना उचित है। यदि हां तो मानना पड़ेगा कि खुदा भी फसली बटेरोंकी नाईं एक नियत समय पर अपने घरमें उपस्थित होता है और शेष दिनोंमें लुप्त रहता है। परन्तु ऐसा नहीं। ईश्वर प्रत्येक समय और प्रत्येक स्थानमें उपस्थित रहता है। वह जो पक्का हाजी है वह सर्वदा निर्दोष जीवन व्यतीत करता है। और कभी भी पशुओंका रुधिर गिराकर पृथिवीको अपवित्र नहीं करता और कभी भी निरपराध पशुओं का गला काट कर अपने चित्तसे दया भावको जो धर्मका मूल हैं हानि नहीं पहुंचाता वह सदैव ही आराममें रहता है और इसीलिये अरबी हाजीसे बढ़कर कि जिकका अहराम थोड़े दिनों के लिये ही होता है, अधिक प्रतिष्ठाका भाग होता है। ईश्वर करे कि मुसलमानोंमें ऐसे निर्दोष हाजी उत्पन्न हों, केवल हाजी ही उत्पन्न न हो किन्तु बुद्धिमान् और ब्रह्म ज्ञानी लोग उत्पन्न हों। जो उपरोक्त बातोंको छोड़नेके अतिरिक्त निम्न लिखित सृष्टि विरुद्ध बातोंको गहरी दृष्टिसे देखें और उनसे चित्त हटावें। उपस्थितगण! मैं कुरानी शिक्षाकी बातोंमेंसे कुछ बातें कि जिन पर सभ्य मनुष्य हँसी उड़ाते हैं आपके सम्मुख उपस्थित करता हूं॥

सी० ७ सू० मायदा आ० ६६-६८

(४८) कुरानकी शिक्षा है कि महात्मा मूसाकी लाठीका खुदाने बड़ा भारी सांप बना दिया। जिसको देखकर फरऊन,

जो एक नास्तिक राजा था, डर गया। उसने समझा कि मूसा एक जादूगर है। सब जादूगरोंको उपस्थित होनेकी आज्ञा दी। जादूगरोंने लाठियों और रस्सियोंके सांप बना दिये। मूसा भी यह दृश्य देख कर डर गया। खुदाने उसी समय फरिस्ता भेजा कि मत डरे, तू जीत जायगा अपनी लाठी पृथिवी पर फेंक दे। निदान मूसाने खुदाकी आज्ञानुसार अपना डण्डा पृथिवी पर दे मारा फिर वह 'फैजा हिया सोबानुन मुबीन" देखतेके देखते ही एक भारी अजगर बन गया और "फैजा हिया तलक फोमा या फिकून" जादूगरोंके डंडों और रस्सोंसे बनाये हुये सब सांपोंको खा गया। भाष्यकारोंने तो यहां तक गप्प हांकी है कि यह सब डंडे और रस्से ४० गदहों पर लादकर तमाशा घरमें लाये गये थे, और कई सौ मन तौलमें थे। मूसा-की लाठीने कई सौ मन लाठियोंको खाकर डकार तक भी न ली और जुगाली तक भी न की! कहा गया है कि चारों ओर देखनेवाले जो एकत्रित थे वे इस अद्भुत अजगरको देखकर ऐसे अन्धाधुन्ध भागे कि इस गड़बड़में २५००० मनुष्य पावोंके तले रौंदे जाकर मारे गये। मूसाने जब देखा कि यह तो बड़ा अन्याय हुआ, इतनी ईश्वरकी प्रजा यों ही मारी गई, तो उन्होंने तुरन्त सांपको पकड़ लिया और वह वैसेकी वैसे ही लाठी बन गई। आश्चर्यका स्थान है कि उस लाठीकी तौल कई सौ मन रस्से और डंडे खा कर भी उतनी ही रही जितनी कि पहले थी और उसका पेट तनिक भी बड़ा न हुआ और न कहीं वह

खुराक दृष्टि पड़ी। सच है मोजजा (अद्भुत क्रिया) हो तो ऐसा ही हो, और उसको मानने वाले भी हों तो कुरानवाले ही हों ! जो पहिले सृष्टि नियम और बुद्धिको पागलखानेके दारोगों के हाथ बन्धक कर दे। एक उन्निसवीं शताब्दीके रिफार्मर मुसलमानने कुरानकी ऐसी मिथ्या बातों पर कलई तो चढ़ाई, परन्तु वृथा मुलम्मा करनेसे यथार्थको नहीं छिपा सकते। ईश्वर करे मेरे भाइयोंकी आंखें खुले और इस प्रकारकी असत्य बातोंको वह देख सकें।

सी० ६ सू० एराफ आ० १७ ११७

(४६) कुरानकी शिक्षा है कि मूसाने उपरोक्त लाठी मार कर समुद्रको फाड़ दिया और उसमें बारह रास्ते बन गये। मूसाकी सब सेना उनमें होकर चली गई और जब फरउनकी सेना निकलने लगी तो समुद्र मिल गया और वे सब डूब गये और मूसा बनीइसराईल सहित बच निकले। „वाह ! क्या विचित्र लाठी थी, जो मूसाके साथ एकान्तमें बातें करती थी, रातको पहरा देती थी, दिनको छत्रीका काम देती थी, और इच्छानुसार छोटी बड़ी हो जाती थी ! तभी तो उसने समुद्रको फाड़ दिया, परन्तु ज्ञात नहीं कि महात्मा मूसाके मरनेके पश्चात् वह लाठी कहां चली गई। निःसन्देह ऐसा पदार्थ अजायब घरमें रखा जाना चाहिये शोक है ! ऐसी इलहामी गप्पों पर।

सी० १६ सू० शुअरा आ० ६३-६६

(५०) कुरानकी शिक्षा है कि हजरत मूसाने डंडा मारकर

पत्थरमेंसे बारह श्रोत निकाल दिये बनीइसराईलने अच्छे प्रकार तृप्त होकर पानी पिया। बुद्धिमान् भाष्यकार महाशय तो इस गप्पको यहां तक हांकते हैं कि जब महात्मा मूसा यथन नामिक नगर विशेषमें पधारे तो मार्गमें उनको एक छोटा सा पत्थर मिला उसने हजरत मूसासे बार्तालाप किया और कहा कि मुझे उठाले। मैं किसी कठिन समयमें काम आऊंगा। निदान महात्मा मूसाने वह पत्थर उठा कर अपने तोबड़ेमें डाल लिया। जब बनीइसराईलने पानी मांगा तो खुदाने कहा कि वह पत्थर जो तेरे तोबड़ेमें है उसको निकाल और लाठीसे मार, उसमेंसे बारह श्रोत निकल आवेंगे निदान ऐसा ही हुआ। पुराणने तो शिवजीके शिरमेंसे गंगा बहा दी, परन्तु कुरानने अपने बड़े भाई से तनिक आगे पग बढ़ाया और पत्थरमेंसे बारह धारा निकाल दीं। शोक है संसारकी अविद्या पर।

सी० १ सू० बकर आ० ५९।

(५१) कुरानकी शिक्षा है कि जब बनीइसराईल सत मार्ग विहित होगये और खुदाकी बातोंको भूल गये तो खुदाने पहाड़ उठा लिया और उनसे कहा कि या तो मेरी बातोंको मानलो नहीं तो अभी पहाड़ तुम्हारे शिर पर गिरता है। बड़े आश्चर्य-की बात है कि खुदाने पहाड़ उठानेका कष्ट सहा! यह सम्भव जान पड़ता है कि पहाड़ उठानेकी कहानी या तो कुरानसे पुराण में आई अथवा पुराणसे कुरानमें गई, क्योंकि महाराज श्रीकृष्ण का ऊंगली पर पहाड़ उठाना भी कुछ अभिप्राय रखता है हाय

अविद्या और अन्धकार।

सी० २ सू० बकर आ० ६२।

(५२) कुरानकी शिक्षा है कि महात्मा सुलेमान एक दिन मैदानमेंसे जा रहे थे, वहांकी चींटियोंने जब उनकी सेनाको आते देखा तो उनमेंसे एक चींटी बोली कि भाइयो! अपने बिलोंमें घुस जाओ। ऐसा न हो सुलेमान और उसकी सेना तुमको पांवके नीचे कुचल डाले। सुलेमान इस बातको सुनकर बहुत हँसा और उसने ईश्वरका धन्यवाद किया कि च्यूटियोंकी बातचीत भी सुन सकते थे। महाशयो डारविन जैसे मनुष्योंने मक्खियों और च्यूटियोंके पीछे आयु व्यतीत करदी, पर उनकी भाषाको न समझ सके। शोक है ऐसी गढ़न्त पर! तीक्ष्ण बुद्धि भाष्यकारोंने तो यहां तक बात बढ़ाई है कि इस च्यूटीका शरीर भेड़के समान था, और उसका नाम मन्दजा था और सुलेमानने उसका शब्द तीन कोसके अन्तरसे सुन लिया। बात चीत करते समय सुलेमानने बीबी च्यूटीसे पूछा कि तेरी सेना कितनी है? च्यूँटी बोली कि मेरे पास चार सहस्र योद्धा और प्रत्येक योद्धाके आधीन चालीस चालीस सहस्र प्रधान और प्रत्येक प्रधानके आधीन चालीस सहस्र च्यूँटियां है। सारांश यह कि सुलेमान और बीबी च्यूँटीका बड़ा आश्चर्य जनक सम्भाषण है जो बच्चोंको बहलानेके लिये मनोरंजक है। शोक है! भाष्यकारोंकी बुद्धि पर कि च्यूँटियोंकी कहानियोंको ईश्वरकी ओरसे कहकर ईश्वरीय ज्ञानका नाम बदनाम करते हैं।

ईश्वर ! तू प्रकाश भेज और भाइयोंको सीधा स्वर्ग दिखा।

सी० १६ सू० नमल आ० १७-१६

(५३) कुरानकी शिक्षा है कि हजरत सुलेमान जन्तुओंकी भाषा जानते थे। जैसे हुदहुद वा चक्की राहे पक्षीकी जो कुरानमें कहानी है वह विचित्र है। हुदहुदको सुलेमानके साथ बातचीत, चक्की राहेका रानीको ओरसे पत्र लेजाना और वहांसे उत्तर लाना रानीका सुलेमानके समीप आना इत्यादि एक मनो-रंजक कहानी और ईश्वरीय ज्ञानकी कहानी है। कदाचित् इसी कारणसे लोग हुदहुदको सुलेमानका पुत्र कहते हैं! परन्तु क्या आज कल वह अपनी सुलेमानी भाषा भूल गया है। शोक है! ऐसी गप्पोंके लिगे जबराईलके पंख थकाये जावे। और जो लोग इनको ईश्वरकी ओरसे न समझें उनको काफिर कहा जावे। आश्चर्यकी बात है कि अविद्याके समयमें तो लोग मन गढ़न्त बातों पर विश्वास कर लेते थे, परन्तु आज कल सभ्य शिक्षित बी० ए० और एम० ए० की डिगरी प्राप्त स्कूलों और कालिजोंमें चौदह पन्द्रह वर्ष तक विद्या प्राप्त बुद्धिमान् मुसलमान भी बहुधा इनका आखेट बन रहे हैं।

सी० १० सू० नमल आ० १६-२२

(५४) कुरानकी शिक्षा है कि वायु सुलेमानकी आज्ञासे चलता था और उनके सिंहासनको एक स्थानसे दूसरे स्थान पर पहुंचा देता था। सम्भव है कि कोई कुरानी इस स्थानसे यह सिद्ध करनेकी चेष्टा करे कि देखिये महाशय ! कुरान तो साइन्स

का घर है। यूरोप वासियोंने तो अब वेलून यन्त्र बनाया है, परन्तु कुरानमें उसका वर्णन पहिले ही से था। सुलेमान वेलून पर चढ़ा करते थे। सम्भव है कि कुरानमें से रेल और तार भी निकल आवें! परन्तु सुलेमानका वायुको आज्ञानुकूल चलाना अत्यन्त ही आश्चर्यकी बात है। वायु किस प्रकार उनकी आज्ञाको सुनता होगा! इसी बातको लेकर कदाचित् एक परिहासकने वायु और मच्छरोंका अभियोग सुलेमानके न्यायालयमें आना बतलाया है।

सी० २३ सू० सद आ० ३६॥

(५५) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाकी वही (स्वर्गीय आज्ञा) केवल पैगम्बरोंके पास ही नहीं आई किन्तु वह मधु-मक्खियोंके पास भी आई। निदान मक्खियोंका मधु एकत्रित करना और घर बनाना इसी वहीके अनुसार है कि जिस वहीके अनुसार कुरान है। इसके अनुसार तो फिर पक्षियों, अबाबीलों, कौवों, कबूतरोंके घोंसले भी खुदाकी वहीके द्वारा ही बनते हैं परन्तु जबराईल किस २ के पास पहुंचाता होगा! राज और अन्य शिल्पकार भी तो फिर खुदाकी वहीके अनुसार ही सब काम करते होंगे। परन्तु जबराईलका आकार वे क्यों नहीं देख सकते और क्यों नहीं वे इलहामका दम भरते? इसलिये कि वे बुद्धिमान् हैं।

सी० १४ सू० नहल आ० ६८-६९

(५६) कुरानकी शिक्षा है कि अबाबीलोंने कंकरियें मार

कर हाथियों और मनुष्योंका खलियान कर दिया और सब सेना को नष्ट कर दिया। निःसन्देह यदि यह गप्प कुछ भी बढ़कर न हो तो वह मोजजा नहीं समझी जासकती। कहां हाथी और कहां अबाबील एक कीड़े खाने वाला पक्षी! भाष्यकार महाशयोंने अपनी तीक्ष्ण बुद्धिसे अच्छा काम लिया है। कहते हैं कि एक एक अबाबील तीन तीन कंकरियां लिये हुए था, दो दोनों पंजोंमें और एक मुंहमें। प्रत्येक कंकरी पर मारे जाने वालेका नाम लिखा हुआ था! उसीके वह लगती थी, दूसरेके नहीं, यहां तक कि जो मनुष्य रणभूमिसे भाग गये थे उनके नामकी कंकरी उनके पीछे गई और जहां वे ठहरे वहां जाकर शिर पर लगी और नष्ट कर दिये। शोक अविद्याके समयके बने हुए वृक्ष अब तक हरे हैं!!

सी० ३० सू० फील आ० १-५

(५७) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने नास्तिकोंको आस्तिक बनानेके लिये एक विशेष ऊटनी उत्पन्न की। मूर्ख लोग तो यहां तक गप्प हांकते हैं कि वह ऊटनी एक पत्थरमें से उत्पन्न हुई और उत्पन्न होनेके साथ ही उसने बच्चा भी दे दिया। फिर काफिरोंने उस ऊंटनीको मार डाला और उन पर दुःख पड़ा। भाष्यकार लिखते हैं कि उस ऊंटनीका बच्चा डर कर पहाड़की ओर भाग गया और वहां तीन वार चिल्लाया और फिर आकाशकी ओर उड़ गया। निदान प्रलयके दिन यह ऊंटनी बच्चे सहित बहिश्तमें चरे फिरेगी। शोक है ऐसी

मूर्खता पर और ऐसी गप्पों पर।

सी १५ सू० इस्राईल आ० ५६ ॥

(५८) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने बनी इसराईलको उनके दुष्टाचारके कारण बिजली द्वारा नष्ट कर दिया। भाष्यकार कहते हैं कि महात्मा मूसा इस बातको देख कर रो पड़े कि लोग मुझे क्या कहेंगे। इसलिये खुदाने उन सबको फिर जीवित कर दिया। विदित होता है कि यह किसी दूसरी बातोंकी भाँति यों ही गप्प हांक दी है नहीं तो बिजलीके साथ नष्ट होजाना और फिर जीवित होजाना क्या अर्थ रखता है?

सी० १ सू० बकर आ० ५४-५५

(५९) कुरानकी यह शिक्षा है कि जब बनी इसराईल मिश्र देशसे निकल कर भूखों मरने लगा तो खुदाने उनके लिये मन (हलवा विशेष) और सलवा (बटेरकी भाँतिका पक्षी) आकाशसे भेजे। भाष्यकार कहते हैं कि सलवा एक प्रकारका पक्षी होता था जो घास पर आकर बैठता और चेवहानेके पश्चात् स्वयं ही भुनकर नीचे गिर पड़ता था। उसमें न नस होती, न रुधिर, न हड्डी। तीक्ष्ण बुद्धि भाष्यकारसे कोई पूछे कि पक्षी स्वयं भुनकर किस प्रकार गिर पड़ा करता था और यदि उनमें नस, रुधिर, हड्डी आदि नहीं थी तो वे उड़ने वाले पक्षी कैसे होगये! यह सब बच्चोंको बहलानेके लिये कहानियां हैं जिनको मैं कदापि स्वीकार नहीं कर सकता।

सी० १ सू० बकर आ० ५६

(६०) कुरानकी शिक्षा है कि बनी इसराईलको धूपने सताया तो खदाने उस पर बादल भेज दिया और वह छप्परका काम देने लगा। कुछ लोग यहां तक अनर्थ करते हैं कि वह बादल बनी इसराईलके साथ २ शिरों पर चला करता था और छाँह रखता था। मैं इसको स्वीकार नहीं कर सकतो ?

सी० १ सू. वकर आ० ५६

(६१) कुरानकी शिक्षा है कि बनी इसराईलको कहा गया कि गायको बध करो। लोग बड़े चकराये। मूसासे कहने लगे कि तुम हमारे साथ ठठोल करते हो। उनके चकरानेका यह कारणसा था कि उनमें से एक मनुष्यको किसीने मार डाला। मृतकको मारने वाला नहीं मिलता था। इसलिये खुदाने आज्ञा दी कि गाय बध करके उसका एक टुकड़ा मृतकको मारो तृतक जीवित हो जायगा और स्वयं अपने मारने वालेका नाम बता देगा। निदान खुदाके साथ बहुत तर्क वितर्कके पश्चात् गायके रङ्ग आयु परिणाम आदिका निर्णय हुआ और गाय बध की गई। भाष्यकार महाशय इस बातको पुष्ट करनेके लिये लिखते हैं कि गायकी पूछ लेकर मृतकके मारी गई। तत्क्षण जीवित हो गया और मारने वालोंके नाम बताकर तुरन्त ही मर गया! देखिये गायकी पूछसे मृतकको जीवित करनेकी सामर्थ्य है! इसलिये यदि कुछ पौराणिक हिन्दू गायकी पूंछ पकड़ कर मुक्ति पा लेना मानलें तो क्या आश्चर्य है। शोक है कि कुरान जैसा उम्मुल किताब (किताबकी माता अर्थात् मूल) ईश्वरीय

होनेके स्थानमें इस प्रकारकी गप्पोंसे उम्मुलगप्पात (अर्थात् गप्पोंकी माता वा मूल) बन रही है।

सी० १ सू० बकर आ० ६१-७२

(६२) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने फरऊनके लोगोंपर टिड्डी मेंडक चीचही आदिका दुःख उतारा और फरऊनियोंके घरोंको तूफान (रौ) में डुबो दिया। भाष्यकार लिखते हैं कि फरऊनके घरोंमें तो पानी भर गया, परन्तु इसराईलियोंके घर नीचे होने पर भी सूखे रहे और फिर खुदाने नील नदीका सब पानी लोहू कर दिया। जब फरऊनी लोग पीते, तब तो लोहू हो जाता और जब इसराईली पीते तब वैसेका वैसा ही पानी रहता। मैं पूछता हूं कि ऐसी मिथ्या बातोंकी क्या आवश्यकता थी? सच है हबशियोंके हाथमें गोरा मनुष्य जा फंसो, उन्होंने देखा कि यह तो हमसे सर्वथा विलक्षण है, मुंह पर स्याही मलकर अपने जैसा कर लिया! शोक है! भाष्यकारोंकी बुद्धि पर और आश्चर्य है, ऐसे इलहामों पर कि जिन को मैं स्वीकार करनेमें असमर्थ हूं।

सी० ६ सू० एराफ आ० ३-१३

(६३) कुरानकी शिक्षा है कि जब मूसा कोह तूर पर खुदा से बातें करनेमें निमग्न थे तो बनी इसराईलने एक बछड़ेकी पूजा आरम्भ कर दी, जो सोने चांदीके गहनोंको ढालकर बनाया गया था और वह गायकी भांति बोला करता था। आश्चर्य है कि धातुसे बना हुआ बछड़ा गायकी नाईं बोले। परन्तु

उपस्थित गण ! कुछ तो स्वयं खुदाने और कुछ भाष्यकारोंने इस बातको स्पष्ट कर दिया है कि जब बनी इसराईल नील नदीको पार कर रहे थे तो महात्मा जबराईल घोड़े पर सवार होकर उसके आगे २ चलते थे। एक मनुष्य सामरी नामीने जबराईलको देख लिया और उनके घोड़ेके सुमके नीचेकी धूलसे एक मुट्ठी भर ली। जब उसने मूसाकी अनुपस्थितिमें सोने चांदीको ढालकर बछड़ा बना लिया तो उसके मुंहमें वह मुट्ठी डाल दी। वह उसी समय बोलने लगा और उसका शब्द सुनते ही बनी इसराईल उसके सम्मुख सिजदेमें गिर पड़े। ज्ञात होता है कि पूर्वकालमें गायकी पूजा पृथिवी भर पर थी। किन्तु खुदाके कलाममें धातुके बछड़ेका जीवित होना और बोलना चलना केवल गप्प है कि जिसको मैं कदापि नहीं मान सकता।

सी० १६ सू० तो आ० ८८-९८

(६४) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने इबराहीमसे कहा कि अपना बेटा मेरे नाम पर बलिदान कर, निदान वह बलिदान करने लगे; पर छुरीने काट न किया और खुदाने एक दुम्बा जबराईलके हाथ बहिश्तसे भेज दिया और कहा कि हे इबराहीम तू बड़ा शूर है। ले इस भेंड़ेको, अपने पुत्रके बदले बलिदान कर भाष्यकारोंने इसको और बढ़ाकर लिखा है कि इसमाईलकी ग्रीवा तांबेकी बन गयी, इस कारण छुरीने काट न किया कोई २ कहते हैं कि कट जाती थी और पुनः मिल जाती थी अब दुम्बा जो बहिश्तसे लाया गया था जो एक समय आदमके पुत्र हाबीलने

खुदाके नाम पर बलिदान किया था। वह इस कारण कि बहिश्तमें था, अब दुबारा बलिदान किया गया। उसके बड़े २ सिंग थे और चालीस वर्ष पर्य्यन्त बहिश्त की अंगूरी चरता रहा था। मैं इन मिथ्या बातोंको नहीं मानता।

सी० २३ सू० जकात आ० १०२-१०७

(६५) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाके पैगम्बर इबराहीमको अग्निमें डाल दिया गया अग्नि नितान्त ठण्डी होगयी। चारों ओर पुष्प खिल पड़े और पानीके श्रोत बहने लगे। आश्चर्यकी बात है कि लटीमर और करनीमर जैसे ईश्वर भक्त आगमें फेंके गये और वह ठण्डी न हुइ। क्या खुदाको स्मरण न रहा था! और खुदाका इबराहीमसे विशेष प्र म था और वहां आगके फूल बना दिये और यहां ठण्डी तक न की? यह सब मूर्खोंको विश्वासी बनाने की बातें हैं। यदि कुरानका खुदा कोई ऐसी लीला दिखा सकता है तो चाहिये कि आज कल किसी मुसलमानको जो ईश्वर प्राप्त मनुष्य और पैगम्बर होकर खुदाके साथ ईसा अथवा मूसाकी नाईं बातें करनेका दम भरता हो, एक लम्बी चौड़ी भट्टीको आगसे भर कर, बीचमें फेंक दिया जावे। यदि आग पुष्प बन जावे तो समझें कि कुरानी मोजजे सब सत्य हैं? बहुधा मूर्ख लोग तो इस मोजजेके यहां तक विश्वास हैं कि वह आयत " कुलना या नारो कूनी व रदन व सलामन् अलाइबराहीम " को पीपलके पत्तों पर लिख कर ज्वरके रोगीको धोकर पिलाते हैं और विश्वास रखते हैं कि इससे बुखार उतर जाता

है। शोक है इस मूर्खता पर।

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ६६

(६६) कुरानकी यह शिक्षा है कि मूसा एक ईश्वर भक्तसे मिलने गया। पता यह है कि जहां भुनी हुई मछली जीवित होकर पानीमें चली जावे, वहां पर ही वह मनुष्य मिलेगा। बड़ा कष्ट उठाकर मूसा एक स्थानमें पहुंचे। जहां मछली जीवित होकर पानीमें चली गई और इस ईश्वर भक्तसे बातें की। मैं पूंछता हूं कि भुनी हुई मछली क्योंकर जीवित रही हो विश्वास रहित गप्पोंका नाम ही मोजजा होता है। मैं इस शिक्षाको नहीं मान सकता।

सी० १६ सू० कहफ आ० ६२ ६५

(६७) कुरानकी शिक्षा है कि महात्मा ईसा मिट्टीके खिलौने बनाकर उनमें आत्मा डाल देता था और अपने मित्रोंके सम्मुख ही उसको उड़ा दिया करता था। यह उसका मोजजा था। कुरानी तो यह मान सकते हैं क्योंकि महात्मा ईसा उनके विचारानुसार बिना पिताके उत्पन्न हुए थे, इसलिये वह पशुओंको भी बिना मा बापके उत्पन्न कर सकते थे, परन्तु मैं इतनी बड़ी गप्पों और सृष्टि नियम विरुद्ध बातोंको कदापि नहीं मान सकता!

सी० ३ सू० उमरान् आ० ४८।

(६८) कुरानकी शिक्षा है कि महात्मा ईसा मुर्दोंको जीवित कर देते थे। शोक है जीवित करनेका नुसखा कदाचित भूलसे

कुरानमें न लिखा जा सका, नहीं तो मुर्दों पर आज कल भी परीक्षा करके देख लिया जाता। भाष्यकारोंने जो इस पर बुद्धिको दूर रख कर लिखा है, वह विचित्र लिखा है। फिर एक मौलवी साहब कहते हैं कि कुरानकी शिक्षा सृष्टि नियमानुकूल होती तो मैं उसको क्यों त्यागता यहां तो पुराणोंसे भी बढ़कर लीला उपस्थित है।

सी० ३ सू० उमरान आ० ४७

(६६) कुरानकी शिक्षा है कि यहूदियोंने न तो महात्मा ईसाको मारा न फांसी ही दी, किन्तु उन लोगोंको भ्रम हो गया। इस भ्रमको भाष्यकारोंने यों सिद्ध किया है कि महात्मा ईसाको खुदाने आकाश पर बुला लिया, और उसके स्थानमें उसके एक शत्रु का आकार जो ईसाके मारने पर उतारू था ईसा के सदृश बना दिया। लोगोंने उसे मार डाला। और महात्मा ईसा साहब आकाश पर भाग गये। न जाने आकाश पर किस प्रकार उड़ गये। और चालीस पचास मील ऊपर जाकर वह स्वास कैसे लेते रहे! यह बाइबिलका नकल की गयी है। और इसीके अनुकरणमें उन्होंने पैगम्बरको भी बुराक पर चढ़ा कर सातों आकाशोंकी सैर करा दी है, और आदम ईसा मूसा इबराहीमकी खुदासे बातें करा दी है।

सी० ६ सू० निसाम आ० १५-५८

(७०) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने एक मनुष्यको प्रलय का विश्वास दिलानेके लिये मार दिया। और सौ वर्ष पश्चात्

जीवित करके पूछा बता तुम कितने वर्ष मृतक रहा, कहा एक दिनसे भी न्यून खुदाने कहा कि नहीं तू सौ वर्ष तक मृतक रहा देख तेरे गधेकी हड्डियां अत्यन्त सड़ गई हैं। हम उनको तेरे सम्मुख ही मांस और खोल लगाकर जीवित करते हैं। गधा भी सौ वर्षका मृतक जीवित हो गया। उत्तमता यह है कि उसका खाना भी सौ वर्षमें कुछ भी न सड़ा और वैसेका वैसा ही तर व ताजा रहा। क्या यह छोटीसी गप्प है? विदित होता है कि उस मनुष्यने स्वप्न देखा होगा! पर उड़ाने वालोंने अच्छी बेपर की उड़ाई! इलहामी पुस्तक गप्पोंका घर है इस कारण मानने योग्य नहीं।

सी० ३ सू० बकर आ० २०६

(७) कुरानकी शिक्षा है कि इबराहीमने खुदासे पूछा। ऐ खुदा! तू कैसे प्रलयके दिन मृतक जीवित करेगा। खुदाने कहा क्या तुझे इसमें कुछ सन्देह है? इबराहीमने उत्तर दिया कि सन्देह तो नहीं पर मेरे मनको विश्वास नहीं है। खुदाने कहा अच्छा चार पक्षी लेकर उनके टुकड़े करके चार पहाड़ों पर रख दे और फिर उनको बुला। वह तेरी ओर भागते आयेंगे। तीव्र बुद्धि भाष्यकारोंने उस पर टिप्पणी चढ़ाकर भली भांति प्रकाशित किया है लिखते हैं कि महात्मा इबराहीमने एक कव्वा एक कबूतर एक फाखता (पिण्डख) और एक मैना चार पक्षी लिये चारोंके शिर काट कर तो अपने पास रख लिये और धड़ों को ओखलीमें मिलाकर कूट चूर २ कर दिये और उस चूड़ेका

थोड़ा २ सा भाग पर्वतों पर रख दिया, फिर बोलने लगा "ऐ कौव्वे आ, ऐ कबूतर चला आ, ऐ फाखता (पण्डख) उड़कर आजा, ऐ मैना चल और तुम अपने २ शिरोंके साथ आलगो" निदान ऐसा ही हुआ। महात्मा इबराहीमको तो इस विचित्र लीलासे विश्वास आगया। पर मेरा कुरान परसे ईमान टूट गया। शोक ! मैं ऐसी निरर्थक बातोंको स्वीकार नहीं कर सकता।

सी० ३ सू० बकर आ० २६०

(७२) कुरानकी शिक्षा है कि सप्ताह वाले दिन मछली पकड़ने वालोंको खुदाने सुअर और बन्दर बना दिया। पूछना चाहिये कि मनुष्योंके सुअर और बन्दर कैसे बन गये क्या उनके पूंछ भी निकल आई थी। अथवा बिना पूंछके बन्दर और सुअर बने थे। ये सब व्यर्थ गप्पें हैं जिनको बुद्धिमान् कदापि मान नहीं सकते। ईश्वर करे कि मुसलमानोंको इन बातोंका यथार्थ पता लगे ! परन्तु मुझे डर है कि जब उनको ये बातें मिथ्या जान पड़ैगी तो इन पर नया जामा चढ़ानेकी चेष्टा करेंगे। कुछ लोगोंने ऐसी चेष्टा की भी है, और कुछ कर रहे हैं। जब उन्होंने देखा कि महात्मा कुरान बह चले तो व्यर्थ टिप्पणी और रंग चढ़ाना आरम्भ किया कि किसी प्रकार यह कठपुतलीकी दृश्य (तमाशा) बना रहे। मैं इनसे पूछता हूं कि यदि एक बात प्रत्यक्ष झूंठ और बुद्धि विरुद्ध है तो उसको क्यों न मरी हुई मक्खीकी भांति निकाल कर फेंक दिया जावे।

क्यों झूठमूठ उलटे पुलटे प्रमाण देकर ईश्वरकी शक्तिको बदनाम किया जावे और गधे और ऊंट बनानेके लिये मस्तक (तर्क) छांटी जावे।

सी० ६ सू. एराफ आ० १६६

(७३) कुरानकी शिक्षा है कि कुछ फीट लम्बी चौड़ी नौकामें नूहने पृथिवी भरके सब पशुपक्षी इत्यादिका एक २ जोड़ा उनके खाद्य द्रव्य सहित रख लिया और शेष सब प्राणी नष्ट होगये! यह कितनी बड़ी गप्प, वरन् गप्पका भाई गपोड़ा है। हाथी गेंडा, सिंह, भेड़िये, सुअर, बन्दर, गाय, भैंस, ऊंट आदि लाखों बड़े २ जन्तुओंको एक छोटीसी नौकामें रखलेना कौन मानले? भला क्या महात्मा नूह पृथिवी भरके सब पशु पक्षी कीड़े मकोड़े सर्पादि रेंगने वाले जीवोंके नाम और जाति जानते थे, जो क्रमानुसार नौकामें बिठाते गये। यदि नूहकी कोई ऐसी पुस्तक है जिसमें वह यह नाम छोड़ गये हों मिल जावे तो नेचरिस्टको एक बहुमूल्य उत्तम पदार्थ हाथ लग जावे। पर शोक है इन बातोंका कहीं शिर पैर नहीं है विचारका स्थान है कि कुरान और पुराण एक समान होनेके अतिरिक्त मिथ्या कहानियोंसे कैसे भरे हुए हैं! सच पूछो तो ये दोनों सगे भाई हैं। दोनों ही मूर्खताके राज्यमें उत्पन्न हुए! मूर्ख लोग कहानियोंमें उलझ रहे हैं और बहुधा मिथ्या विचारमें फंसे हैं। ईश्वर इन सब पर अपनी दया करे।

सी० १८ सू० मोमिनूह आ० २०

(७४) कुरानकी शिक्षा है कि यदि एक स्त्री किसी पुरुष का मुख तक भी न देखे तो भी उसके पुत्र उत्पन्न हो सकता है, इस बातका प्रमाण हजरत ईसा और मरियमके बृत्तान्तसे मिलता है जो कुरानमें कई स्थानोमें आया है। कुरान वाले हजरत ईसाको यूसुफ बढ़ईका बेटा नहीं मानते, जैसा कि वह है। उलटा उसे बिना पिताके उत्पन्न हुआ मानते हैं। इस बातसे सृष्टि नियम पर धब्बा और मरियम पर दोष लगता है। और यह बात मोजजेके स्थानमें एक अश्लील बात हो जाती है। मेरी बुद्धि और सभ्यता आज्ञा नहीं देती कि मैं हजरत ईसाको उन बच्चोंके साथ मिलाऊं जो आज कल अज्ञात पितासे उत्पन्न हुबे समझे जाते हैं। कुरानकी ऐसी शिक्षासे ही मेरा मन खट्टा हुआ। ईश्वर करे मेरे भाइयोंको उपदेश प्राप्त हो और इन मिथ्या बायोंसे छुटकारा पासकें।

सी० १६ सू० मरयम आ० १६-२५

(७५) कुरानकी यह शिक्षा है कि जब लूतके अनुगामियों ने हजरत लूतका उपदेश न माना तो खुदाको बड़ा क्रोध आया और इसी क्रोधमें आकर उन सब नगरोंको उठाकर उलटा कर के फेंक दिया और फिर ऊपरसे पत्थरोंका मेह बर्षा दिया। तीक्ष्ण बुद्धि भाष्यकार इस बातको और भी बढ़ाकर कहते हैं और लिखते हैं कि खुदाने आप तो नगरोंको नहीं उलटा था, किन्तु उसने जबराईलको आज्ञा दी कि वह अपने पंख नगरोंके नीचे रख कर गृह आदिको पंखों पर उठा ले, निदान जबराईल

अनेक नगरोंको पंखों पर उठा कर आकाशकी ओर उड़ गया और इतना ऊंचा चला गया कि आकाश वालोंने भी उन नगरों के गधों और कुत्तों और मुरगोंका शब्द सुन लिया। फिर जबराईलने ऊपरसे उल्टा करके नीचे फेंक दिया और वह सब नष्ट हो गये। शोक है! मूर्खता पर।

सी० १२ सू० हूद आ० ८२

(७६) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने शैव पैगम्बरके अनुयायियोंको घोर शब्द करके ही नष्ट कर दिया। और इसी प्रकार सोलह पैगम्बरके अनुयायियोंको नष्ट कर दिया। क्या ये घोर शब्द अब बन्द हो गये हैं? ये सब बच्चोंको बहलानेकी कहानियां हैं कि जिनको यदि पढ़े लिखे मनुष्य सत्य मानलें तो वे भी बच्चे ही समझे जांयगे।

सी० ६२ सू० हूद आ० ६४

(७७) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने मुट्ठी भरकर कंकरियां मार कर मुसलमानोंकी विपक्षी सेनाको भगा दिया। महाशयगण! भला क्या ईश्वर भी कंकरियां और रोड़े मारा करता है? रोड़े मारना अज्ञान बालकोंका काम होता है न कि बुद्धिमानोंका और फिर खुदाका! मैं इन बातोंको मान नहीं सकता।

सी० ६ सू० अनफाल आ० १७

(७८) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने सहस्रों फरिश्ते मुसलमानोंकी ओरसे लड़नेके लिये भेजनेकी प्रतिज्ञा की। शोक

है कि वह आकाशी सहायता अब तक न मिलनेके कारण दीन मुसलमान स्पेन व आस्ट्रीयासे निकाले गये, यूरोपमें उनकी हार हुई, अफरीकामें पराजित हुये, भारतवर्षमें राज खो बैठे। पर स्वर्गीय फरिश्तोंने उनकी सहायता न की। सम्भव है कि फरिश्ते फिरंगियोंकी तोपोंके शब्दसे डरकर आकाशमें ही छिप रहे हों, अथवा मार्ग भूल गये हों। भला ऐसी मिथ्या बात क्या मानने योग्य है!

सी० ६ सू० अनफाल आ० १७

(७६) कुरानकी शिक्षा है कि जुलकरनैनने पश्चिममें जाकर देखा कि सूर्य एक दलदल अर्थात् कीचड़में अस्त होता है। क्या खूब! पर जुलकरनैनी दलदलका जहाज चलाने वालोंको अब तक पता नहीं मिला। अमरीका मिल गया, आस्ट्रेलिया मिल गया, अनेक अन्य टापू भी मिल गये, पर जुलकरनैनी दलदल न मिला। क्या शुष्क हो गई है या आकाश पर चढ़ गई है! महाशयो! एक साधारण भूगोलवित् भी इस बातको नहीं मान सकता तो मैं कैसे मान सकता हूं।

सी० १६ सू० कहफ आ० ८६

(८०) कुरानकी शिक्षा है कि जुलकरनैनने याजूज माजूज को लोहेकी भीत और समुद्रके बीचमें बन्दी कर दिया और ये अद्भुत मनुष्य प्रलयके दिन वहांसे निकलेंगे। शोककी बात है कि यूरोप वालोंने चप्पा २ पृथिवी खोज डाली और पृथिवी भरकी जनसंख्या जानली। पर याजूज माजूज उनको कहीं

न मिले, अर्थात् लोगोंने यह कह देना आरम्भ किया कि दीवार चीन सद सिकन्दरी (अर्थात् सिकन्दर बादशाहकी बनाई भीत शत्रुओंके रोकनेके लिये) है और मङ्गोलिया वाले याजूज हैं। भाष्यकारोंने तीक्ष्ण बुद्धिसे भला काम लिया। लिखते हैं कि याजूज माजूजका परिणाम एक बालिश्तसे लेकर एक सौ बीस गज तक लम्बा है। उनके कान इतने बड़े हैं कि रातको सोते समय एक कानको तो नीचे बिछा लेते हैं और दूसरे कानको चादरकी भांति ओढ़ लेते हैं। शोक है ऐसी तीक्ष्ण बुद्धि पर और शोक है ऐसी इलहामी गप्पों पर! न जाने मुसलमान महाशय कब कुरानी कहानियोंको छोड़ेंगे! पुराणकी बखिया तो स्वामी दयानन्दजीने उधेड़ा और लोगोंको प्रकाश दिखाया, परन्तु कुरानकी बखिया न जाने कौन उधेड़ेगा और मुसलमान कब प्रकाश देखनेके योग्य होंगे। ईश्वर करे यह शीघ्र हो।

सी० १६ सू० कहफ आ० ६४

(८) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने आकाशको बिन खम्भोंके चौकी पहरों सहित उत्पन्न किया और जब कोई शैतान चुप चाप ऊपर जाकर फरिस्तोंकी बात चीत सुनने लगता है तो उसके नक्षत्र तोड़ कर मारे जाते हैं और शैतान इस अग्निवर्षासे डर कर भाग जाता है। निस्संदेह यदि शैतान अपनी शैतानी से न फिरे तो एक दिन आकाश नक्षत्रोंसे रहित हो जायगा और फिर चन्द्रमा और सूर्य तोड़ कर मारने पड़ेंगे। फिर किसी दिन सातोंके सातों आकाश ही शैतानके शिर पर मारने पड़ेंगे।

एक तीव्र बुद्धि भाष्यकारने गप्पोंकी गप्प हांकते हुये लिखा है कि प्रथम आकाश दृढ़ लहरका और द्वितीय संगमरमरका तृतीय लोहेका चतुर्थ शीशेका पञ्चम चांदीका षष्ठ सुवर्णका सप्तम लालमणिका है। अत्यन्त शोक है इन पूर्ण मूर्खों पर! भला यदि कोई मुसलमान विद्यार्थी भूगोल और एस्ट्रनोमी (ज्योतिष) पढ़कर कुरानसे विमुख न होजाय तो वह और किस कूपमें गिरे

सी० २३ सू० साफात आ० ७—१०

(८२) कुरानकी शिक्षा है कि रोजेके दिनोंमें उस समय तक खाना उचित है जब तक प्रातः कालकी सफेदी इतनी न होजाय कि श्वेत धागेको काले धागेसे भेदकर सकें। उसके पश्चात् दिन भर मुंह बन्द रखना उचित है। आधीरातको उठकर खाना कितना सृष्टि नियम विरुद्ध है। पशु पक्षी, कीट पतङ्गादि भी बहुधा रात्रिको विश्राम करते हैं। परन्तु रोजेदारको पेटकी पड़ी हुई होती है। अरबमें तो यह कानून चल गया। परन्तु खुदाको यह नहीं सूझा कि पृथिवीके उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवके रहनेवाले कैसे रोजा रक्खा करेंगे? क्या ६ मास पर्यन्त दिनको भूखा मरना पड़ेगा! कितनी अधूरी शिक्षा है। महाशयगण! उपरोक्त आक्षेप योग्य बातोंको रद्दीके टोकरेमें डालकर तनिक एक पग और आगे चलिये।

सी० २ सू० बकर आ० १८७

(८३) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने आकाशको हाथोंके बलसे बनाया और खुदाको तनिक भी थकावट न हुई। मैं

पूछता हूं कि हाथोंसे आकाश बनानेकी क्या आवश्यकता थी ? "कुन्" का शब्द कह देना ही काफी था, आकाश बन गया होता ! यह माना जा सकता है कि रब्बउल कुरान बड़ा शक्तिमान और बली है, इसलिये हाथके साथ कम करके साधारण मजदूरोंकी भांति उसको कुछ थकावट न हुई किन्तु वह कुन्का शब्द क्यों भूल गया। कदाचित् हाथका बल दिखानेके लिये। शोक है ! इस शिक्षा पर।

सी० ३७ सू० जारयात आ० ४७

(८४) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने पृथिवीपर पहाड़ इस कारण रक्खे हैं कि वह मनुष्योंके भारसे हिल न जावे। शोक है ! कि फिर भी पृथिवी की सरदर्दी दूर न हुई और बराबर घूम रही है और बहुधा मारे कष्टके कांप उठती है। कहां आज कल का प्रकाश और कहां कुरानकी शिक्षा, भला दोनोंका क्या मेल हो सकता है ?

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ३-१३

(८५) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा आकाश और पृथिवीको थाम रहा हैं। ऐसा न हो कि अपने अपने स्थानसे इधर उधर हट जाय। शोक ! कुरानी खुदाकी शक्ति कितनी अल्प है कि पृथिवीको बनाकर उसको थामना पड़ा। कदाचित् इसीलिये कुरानमें कहा है कि "लाताखुजहोसन्तिबला नौम्" अर्थात् खुदा को न तो कभी नींद आती है और न ऊंघ ही। भला बखेड़े डालकर खुदाको नींद कहां नसीब। तनिक ऊंघ पड़े तो पृथिवी

हाथसे गिड़ पड़े अथवा आकाश छूट जाय और सब कुछ किया कराया मिट्टीमें मिल जावे। कुछ भाष्यकारोंने यों लिखा है जब यहूदी आदि लोगोंने कहा कि ईसा खुदाका बेटा है तो पृथिवी और आकाश इस कुफ्रके शब्दको समझ सुनकर फटनेको ही थे कि खुदाने उनको पकड़ लिया और फटनेसे रोका। शोक है! ऐसे प्रकाशपर हे ईश्वर! तू मेरे भाइयोंको वह प्रकाश प्रदान कर जो मुझको प्राप्त हुआ है।

सी० २ सू० फातिर आ० ४१

(८६) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने नाना प्रकारके कार्य पुरा करनेके लिये फरिश्ते नियत किये हैं। इन फरिश्तोंके पंख होते हैं। कुछके दो २ और कुछके तीन ३ और किसी २ के चार २ और किसी २ के इनसे भी अधिक। भाष्यकारोंने तो जबराईलके छः सौ पंख वर्णन किये हैं, अज्ञानी लोग तो यहां तक वर्णन करते हैं, जबराईलका एक पंख पूर्वमें और दूसरा पश्चिममें पहुंचता है और फरिश्तोंके विषयमें अद्भुत गढ़न्त बनाये हुए हैं जैसे हारुत मारुत दो फरिश्ते बाबलके कूपमें अब तक बन्दी हैं। कदाचित् बाबल नगरके खण्डेर खोदते २ ये फरिश्ते भी मिल जावें मैं ऐसे विचित्र पंखवाले जीवोंका होना नहीं मान सकता।

सी० २२ सू० फातिर आ० १।

(८७) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा दोजखसे प्रलयके दिन प्रश्न करेगा क्या तू इतने मनुष्य और २ पत्थर खाकर तृप्त होगई

वा नहीं ? पेटू जहन्नम बोलेंगी क्या कुछ और भी शेष है ? अर्थात् यदि कुछ शेष है तो दीजिये। खुदा उसके इस पेटूपनको देखकर चूप हो जायगा। और कुछ उत्तर न देगा। निःसन्देह खुदाका उत्तर न देना सभ्यताके सर्वथा विरुद्ध है। भाष्यकारोंने इसका यह उत्तर दिया है कि खुदा अपने दोनों पांव दोजखमें डाल देगा और जहन्नुमको तृप्त करेगा। शोक ! महा शोक ! ऐसी असभ्यताकी शिक्षा पर !

सी० १६ सू० काफ दाल आ० ३०

(८८) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा दोजखको मनुष्यों, जिन्नों और पत्थरोंसे भरेगा। न जानें जिन्न कौन हैं। भूतों और चुड़ैलोंकी कथा तो सुना करते थे। पर जिन्नोंका वृत्तांत कुरान, सूरत जिन्न और अन्य आयतोंमें ही पढ़नेमें आया है। भला पत्थरोंने क्या पाप किया है, जो उनको दोजखमें डाला जावेगा। सम्भव है यह इस कारण हो कि मूर्ति पूजकोंको वहां मूर्ति बनानेके लिये पत्थरोंकी खोजमें इधर उधर न जाना पड़े, किन्तु दोजखमें से ही पत्थर लेकर मूर्ति बनाकर पूजने लग जावें और यह तो कुरानका निश्चित सिद्धान्त है कि सब मूर्ति पूजक दोजखमें डाले जावेंगे। किसीने सत्य कहा हैं कि खुदा प्रत्येक पदार्थके साथ उसके आवश्यक द्रव्य रखता है। क्या ही अच्छा होता यदि वर्तमान समयके प्रकाशके साथ खुदा कुरानको न रखता।

सी १ सू० वकर आ० २४

(८६) कुरानकी यह शिक्षा है कि खुदाको खूब कर्ज (ऋण) दो, यह दो गुना फेर देगा। शोक है! कि खुदा सूदको कुरान में हराममें ठहरावे, और स्वयं दो गुने सूद पर कर्ज ले। भला खुदाको कर्ज की क्या आवश्यकता? क्या उसे किसी बेटे बेटी का विवाह करना था। घर बनवाना था कि लोगोंसे कर्ज लेनेकी आवश्यकता पड़ी। अच्छा होता यदि कहने वाला कहता "खुदाके नाम पर मुझे कर्ज दो" जैसा कि आजकल अनेक भिखमंगे बाजारोंमें कहा करते हैं। "बाबा! खुदाके नामका टुकड़ा दिला" पर कोई ऐसा अपमान नहीं करता कि "बाबा! खुदाको टुकड़ा दिया" शोक है! ऐसी अपमान जनक और व्यथ शिक्षा पर। शोक है! मनुष्य पर, कि उसने खुदाको क्या २ बना दिया कि दूकानदारों और साहूकारोंको भी मात कर दिया।

सी० २७ सू० हदिया आ० १८-११

(६०) कुरानकी शिक्षा है कि यदि खुदा चाहता तो सबको एक धर्ममें कर देता। परन्तु पूछिये कि उसने ऐसा क्यों नहीं किया। और ऐसा क्यों नहीं कर देता। क्या धर्मके लिये लोगोंका रुधिर बहता हुआ देखना उसको अधिक प्रसन्न करता है। क्या रूम देश वासियोंको नाईं है, जो उस स्थान पर बैठ कर सिंह और भेड़ियोंको मनुष्योंके साथ लड़ते हुए और लोहू लुहान होते हुए देखकर अपनी हिंसकताकी तृप्ति करते थे? अथवा क्या वह चाहता है कि धार्मिक युद्धमें भी टेलीमेंग्स वा

एलीमेंक्स आकर अपना रुधिर बहावें तो उसकी हिंसकताकी तृप्ति हो। आश्चर्य है ऐसी शिक्षा पर।

सी० ६ सू० मायदा आ० ५३

(६१) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा जिसको चाहता है गुमराह (कुमार्गगामी) करता है और जिसको चाहता है राह पर लाता है। भला फिर मनुष्योंको क्यों दोजखमें डाला जावे! जब कि उन्होंने जो कुछ किया वह खुदाकी इच्छानुसार ही किया खुदा स्ववं ही दोजखमें जावे। अज्ञानी लोग इस मिथ्या बात पर तदवीर तकदीर भाग्य और चेष्टाकी लंगड़ी शिक्षाका खोल चढ़ाते हैं किन्तु व्यर्थ?

सी० ६ सू० मायदा आ० ४५

(६२) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा मुशरिकके सिवाय अन्य के पाप क्षमा कर देता है। आश्चर्यकी बात है कि एक मूर्ति पूजक कि जिसने कभी मदिरापान, व्यभिचार, चोरी, ठगी नहीं की और सर्वदा अपने देवताके क्रोधसे डरता रहा, दोजखमें डाला जावे। और दूसरी ओर एक मदिरा पान करने हारा कबाबी व्यभिचारी, चोर और दुष्ट मनुष्य अपने सब पापोंको क्षमा करवाकर स्वर्गका आनन्द भोगे। शोक है! कि कर्म 'थ्यौरी' को छोड़ कर पश्चात्ताप क्षमा सहायता और मध्यस्थके निर्मूल और मिथ्या सिद्धान्तोंने बहुधा मनुष्योंको इतना कुमार्गगामी और पापों पर साहसी कर दिया है॥

सी० ५ सू० निसाम आ० ११६

(९३) कुरानकी शिक्षा है कि जब कुरान पढ़ा जाता है तो मुसलमानों और काफिरोंके मध्यमें खुदा एक परदा डाल देता है। जिससे कि काफिर कुरानको न सुन सकें और न समझ सकें। यह इस हेतु कि खुदाने उनके दिलोंपर मुहर लगा दी है और उनकी आंखोंपर पर्दे डाल दिये हैं। भला यदि यही बात थी तो काफिरोंको धर्म शिक्षा करनेके लिये नबी क्यों भेजे और यदि काफिर लोग सत्य मार्गपर न आवे तो उनका दोष ही क्या? महाशयगण! काफिर उसको कहते हैं कि जो निरर्थक बातोंको ईश्वरकी ओरसे न माने और बुद्धि विरुद्ध और सृष्टि नियम विरुद्ध सिद्धान्तों और मौजजों पर हंसी तो नहीं उड़ाता हूं परन्तु अपने मुसलमान भाइयोंके लिये बुद्धि और ज्ञानके लिये प्रार्थना करता हूं। आप मेरी प्रार्थनाका साथ देकर तनिक आगे चलिये मैं आपको बतलाऊंगा कि कुरान उपरोक्त बातोंके सिवाय 'सोशलिजम' के लिये कैसा पीछा पड़ा है। मस्ते नमून अज खरवारह (गोंन भरमेंसे एक मुट्ठी बानगी लेकर देखनेसे अच्छा बुरा विदित हो जाया करता है) देखिये॥

सी० १५ सू० इस्राईल आ०४५-४६

(९४) कुरानकी शिक्षा है कि मुशरिक और काफिर अपवित्र हैं उनसे मित्रता मत करो। यदि कोई उनसे मित्रता करेगा तो वह भी काफिर हो जावेगा और इसी कारण खुदाकी अप्रसन्नताका भागी होगा। काफिरके अर्थ ऊपर बता चुका हूं। शोक है! कि ऐसे बुद्धिमान् और ज्ञानवान् पुरुषोंको अशुद्ध

समझा जावे। और फिर जंगलके खानेबदोश असभ्य और कुशील मनुष्य जो बुद्धि और ज्ञानसे उल्लूकी भांति रहित होकर प्रत्येक गप्पको ईश्वरकी ओरसे कही हुई अंगीकार करलें उनको अत्यन्त शुद्ध माना जावे। कुरानकी इस शिक्षाके अनुसार सब ईसाई, बौद्ध, आर्य, सिक्ख आदि जिनमेंसे प्रथम तसलीस (पिता पुत्र, और पवित्र आत्मा) को मानते हैं। और सारेके सारे ही कुरानको न माननेवाले हैं अशुद्ध ठहराते हैं और दोजखी बनते हैं। केवल थोड़े करोड़े कुरानी ही बहिश्तके ठीकेदार हुए। यद्यपि ईसाई वा आर्य आदि ऐसे बहिश्तके भूखे नहीं हैं। परन्तु कुरानकी यह शिक्षा क्या कभी प्राणिमात्रमें भ्रातृभावका प्रचार कर सकती है ? कदापि नहीं। किसीने सच कहा है कि मुसलमानका हाथ प्रत्येक मनुष्यके विरुद्ध और प्रत्येक मनुष्यका हाथ मुसलमानके विरुद्ध रहेगा। मैं इस भ्रातृभाव फैलानेकी शिक्षाकी जड़ काटने वाले सिद्धान्तको किसी प्रकार ईश्वरकी ओरसे नहीं मान सकता।

सी० १० सू० तोबाः आ० ६१

(६५) कुरानकी शिक्षा है कि काफिरोंको जहां पाओ मार डालो क्योंकि कतलसे कुफ्र बड़ा है। शोक है! इस प्रकार की शिक्षा, शान्ति और चैनको कितनी हानिकारक है। इसी शिक्षाने तो महमूद गजनवीको अमीनुल मिल्लत बनाया।

सी० २२ सू० अरवराब आ० ६१

(६६) कुरानकी शिक्षा है कि लूटका धन खुदा और उसके

रसूलका भाग है और खुदाको लूटके धनका पञ्चम भाग मिलना उचित है। भला जब खुदा ही लूट मार करनेके लिये आज्ञा भेजे तो फिर महमूदका क्या दोष? पर हे भाइयो! मैं इस शिक्षाको बड़ी भयानक और नष्ट करने हारी समझता हूं। ईश्वर प्रत्येक मनुष्यको इससे बचावे।

सी० ६ सू० अनफाल आ० १-२

(६७) कुरानकी शिक्षा है कि मुसलमानी मत खुदाकी ओरसे है। मैं इस प्रकार तो इसलाम और कुरानको ईश्वरकी ओरसे अङ्गीकार करता हूं कि जिस प्रकार सब बुराइयां कुरानी खुदाकी ओरसे हैं वही उनका कर्त्तव्य है। सब कुमार्गमें चलाना कुरानी खुदाकी ओरसे है वह ही कुमार्गमें चलानेवाला है। सब पदार्थोंका यहां तक कि शैतानका भी वही रचैता है। अर्थात् शैतान भी ईश्वरकी ओरसे है। इस प्रकार मुसलमानी मत भी निस्सन्देह खुदाकी ओरसे है परन्तु उपरोक्त शिक्षाको देख कर मैं इसलामको सच्चा धर्म नहीं कह सकता। यदि मैं ऐसा कहूं तो सत्य न्याय यथार्थके गले पर छुरी फेरूंगा, और उपरोक्त बातोंके अतिरिक्त मैं निम्नलिखित बातोंको जो स्त्रियोंके साथ अन्यायके वर्तावके विषयमें हैं, छिपाऊंगा जो मैं कदापि नहीं कर सकता। महाशय गण! इस अन्यायको भी प्रकट करें और देखिये।

सी० ३ सू० उमरान् आ० १६

(६८) कुरानकी शिक्षा है कि स्त्रियां तुम्हारी खेती हैं।

जाओ उनके समीप जिस समय और जिस प्रकार चाहो। खेती किसानों और जमींदारोंका धन होती है; स्त्रियोंको धन कहा गया है, और केवल विशेष भोगकी तृप्तिका पदार्थ समझा गया है। पुरुषोंके तुल्य इनको कोई अधिकार प्राप्त नहीं है आगे देखिये।

सी० २ सू० वकर आ० २१६

(९९) कुरानकी शिक्षा है कि यदि कोई स्त्री दुष्टकर्म करे तो उसको अत्यन्त पीटो और घरमें कैद रखो यहां तक कि वह मर जावे। शोक! स्त्री दुष्टकर्म करे तो उसको पति मारे; यदि पति दुष्टकर्म करे तो उसको स्त्री क्यों न जूती लगाये और घरमें यावज्जीवन बन्द रखे। यह केवल इस कारण कि स्त्री दासीकी भांति धन मानी गई है।

सी० ४ सू० नसाय आ० १३

(१००) कुरानकी शिक्षा है कि मुसलमान लोग स्त्रीको तलाक दे सकते हैं। शोक है! स्त्री कुरूपा हो, कन्या जने वा बुरी हो तो उसको तलाक दे दिया जावे किन्तु यदि पुरुष कुरूप हो, कन्या उत्पन्न करे और बुरा हो तो उसको तलाक न दिया जावे। तलाकका सिद्धान्त जहां स्वयं भ्रष्ट है वहां अपने फलके अनुसार भी बुरा हैं। तलाकका सिद्धान्त पति व पत्नी में सच्चे प्रेमको उत्पन्न नहीं होने देता। किस लिये कि स्त्री सर्वदा डरती रहती है न जाने उसको किस दोष पर तलाक दे दिया जावे। तलाकका सिद्धान्त बाजारी स्त्रियोंकी संख्या

को बढ़ाने वाला है। तलाकका सिद्धान्त स्त्रियोंको निर्मोह बनाने वाला है।

सी० २८ सू० तलाक आयत १-६

(१०१) कुरानकी शिक्षा है कि मुसलमान लोग एक ही समयमें दो दो, तीन तीन, चार चार, स्त्रियां विवाह सकते हैं; भला फिर स्त्रियां एक ही समयमें दो २ तीन तीन चार चार पति क्यों न करें। ऐसा होता कि कुरानकी बनाने वाली कोई स्त्री होती तो हम देखते कि स्त्रियां पुरुषोंको तलाक देतीं, घर कैद रखतीं, एक साथ चार चार पति करतीं। वह समय धन्य होगा, जब मुसलमानोंकी स्त्रियां शिक्षिता होकर दासत्वसे मुक्त हो जावेंगी और पुरुषोंकी भांति सब अधिकार चाहेंगी उस समय उनको कुरानको बन्द करके रखना पड़ेगा वा चार २ पति करनेका समय आयेगा।

सी० ४ सू० नसाय आ० ३

(१०२) कुरानकी शिक्षा है कि मुसलमान स्त्रियां परदा करें और चादरसे अपने मुखको ढक कर बाहर जावें कि परपुरुष उनको न देख सकें वा वे अन्य पुरुषको न देख सकें। कोई कारण ज्ञात नहीं होता कि मुसलमान पुरुष क्यों न चादरोंसे मुख छिपाकर बाहर निकला करें कि कोई परस्त्री उनको न देख सके वा वह किसी पर स्त्रीको न देख सकें। क्या मुखके छिपाने से पवित्रता स्थिर रह सकती है? जब मनका परदा उठ गया हो। इसके सिवाय मुंहको कपड़ेसे छिपाकर सोना, चलना,

फिरना, स्वास्थ्यके लिये अत्यन्त हानिकारक है। शोक है कि पुरुष आप तो खुले मुख स्वच्छ वायु सेवन करें और स्त्रियां बैल की भांति मुंह पर चादर और मुंहछींका डालनेके लिये विवश की जावें।

सी० २२ सू० अखराब आ० ५६

(१०३) कुरानकी शिक्षा है कि मुतबन्ना अर्थात् लेपालक पुत्रकी स्त्री तुम्हारे लिये हलाल हैं। यह बात कितनी आक्षेप-योग्य है। माना कि मुतबन्ना स्वपुत्र नहीं है, पर फिर भी साधारण सोशल मेल मिलापके अनुसार माने हुए बेटेकी स्त्रीसे विवाह करना कैसा अश्लील है। इससे यह सिद्ध होता है कि यदि किसीका मन किसीकी स्त्री पर मोहित होजावे और वह उस स्त्रीको वशमें न कर सके तो उसके पतिको लोभ देकर कि हम तुमको अपनी सब सम्पत्तिका स्वामी बना देंगे, मुतबन्ना बना ले अर्थात् गोद लेले और फिर सहज जोड़ तोड़ करके स्त्री को उड़ा लिया जावे। यदि स्त्री सहमत न हो और कहे कि मैं तुम्हारी पुत्रबधू हूं। तुम मुझे बिना निकाह और बिना साक्षी के क्यों अपने व्यवहारमें लाते हो तो तत्क्षण कुरानी आयत दिखाई जावे, कि देखो तुम हमारे लिये हलाल हो। अर्थात् तुम्हारे साथ विवाह करना दोष नहीं और काजीकी साक्षीकी आवश्यकता नहीं। खुदाने स्वयं मेरा तुम्हारा निकाह कर दिया है। अत्यन्त शोक है! ऐसी शिक्षा पर।

सी० २२ सू० अखराब आ० ३७

(१०४) कुरानकी शिक्षा है कि दरिद्रतासे मत डरो, निकाह अवश्य कर लो। खुदा तुम्हें धनाढ्य कर देगा। सम्भव है कि एक मनुष्य एक विशेष धनवती स्त्रीके साथ विवाह करके धनाढ्य हो गया। पर क्या ऐसा भाग्य प्रत्येक मनुष्यका होता है? नहीं फिर खुदाका दरिद्रताकी दशामें निकाहकी आज्ञा देनेका क्या आशय है? यदि धनाढ्य बननेकी यह खुदाई विधि है, तब तो अच्छी सरल रीति है। पर मैं मुसलमानोंको उपदेश करता हूं कि वे ऐसा न करें जब कि वे स्वयं ही लड्डूड़े हों दूसरे लड्डूड़ेको शिर पर न उठावें।

सी० १८ सू० नूर आयत ३२

(१०५) कुरानकी शिक्षा है कि चचा और मामा आदि समीपके कुटुम्बियोंकी कन्यायें तुम्हारे लिये हलाल है। अर्थात् उनसे विवाह करना दोष नहीं। इतने समीपके कुटुम्बमें विवाह करना मैं अश्लील समझता हूं। सहोदर भाई बहिनोंकी सन्तान एक दूसरेको भाई बहिन कहते फिरें और फिर एक निर्दिष्ट समय आजाने पर वे पति पत्नी बन जावें। अरब निवासी आपसमें एक दूसरे कबीलेके साथ विरोध रखनेके कारण कन्याओंको अपने ही कुटुम्बमें रखते थे और शत्रुके कुटुम्बमें कन्या देना अपमान जानते थे। पर भारतवर्षमें जहां अरबके असभ्य मनुष्यों की भांति अल्प मनुष्य संख्याके झोपड़े पृथक् २ न थे परन्तु वह बड़े २ नगरोंमें जहां नाना कुटुम्ब जाति गोत्रके मनुष्य बास करते रहते हैं, इस नियमका चलाना उचित नहीं हैं। मैं उसको अ-

श्लील जानता हूं।

सी० २२ सू० अखराब आ० ५०

(१०६) कुरानकी शिक्षा है कि मुसलमान वा कुरानी चार से अधिक विवाह एक साथ नहीं कर सकते पर कोई कारण नहीं जान पड़ता कि जो ऐसा नियम बनावें वह अपने आपको क्यों पृथक् जाने और नौ स्त्रियां करे। मैं इस बातको नहीं मान सकता कि नियम बनाने वाला ही नियमको तोड़े। यदि नियम खुदाकी ओरसे है तो क्या कारण कि एक मनुष्य पृथक् कर दिया जावे? इसलिये मैं इस बातको न्यायानुकूल नहीं सम-झता हूं। केवल इस बातको ही नहीं परन्तु उपरोक्त सब बातों को मैं दोष युक्त जानता हूं। ऐसी २ बातोंसे ही तो विदित होता है कि कुरान कदापि ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकता। केवल ईश्वरीय पुस्तक ही नहीं परन्तु वह एक न्यायशील बुद्धिमान मनुष्यकी बनाई भी नहीं समझी जा सकती। प्रथम तो उपरोक्त सब आक्षेप स्वयं इस बातको प्रतीत कर रहे है कि कुरान केवल यही नहीं कि ईश्वरीय ज्ञानसे पतित है परन्तु वह एक मनुष्य कृत पुस्तक कहलाये जानेके भी योग्य नहीं है। पर तौ भी मैं इस बातको और भी स्पष्ट रूपसे आप लोगोंसे निवेदन करना चहता हूं। निष्पक्ष और शिक्षित महाशय जो सत्य भागी हों, वे इस पर विचार करें।

सी० ४ सू० नसाय आ० ३

(१०७) कुरानकी शिक्षा है कि हे रसूल! (ईश्वर कहता

है) हम तुमको यह गुप्त समाचार सुनाते हैं तू और तेरी जाति इससे अत्यन्त अज्ञात थे। महाशयगण! इस वही (ईश्वरकी ओरसे आज्ञा जो जबराईल द्वारा मुहम्मद साहबको आती थी) से पहले नूह इबराहीम आदिकी कहानियोंको वर्णन किया गया है, और इनको ईश्वरीय गुप्त समाचार कहा गया है क्या इनको अरब निवासी पहले नहीं जानते थे, बाइबिलके पढ़ने वाले अन्य मनुष्य भी इनको न जानते थे। यह सत्य है, कि कुरानके उत्पन्न होनेसे पहले इबराहीम, नूह, मूसा आदिकी सविस्तर कहानियां बाइबिलमें लिखित थीं। फिर उसको गुप्त समाचार कहना और इलहामका दम भरना सर्वथा भूल है। न जाने ईश्वरको बाइबिलका संक्षेप बनानेके लिये क्यों जबराईलके भेजनेकी आवश्यकता पड़ी। मैं बाइबिलको कुरानसे अधिक प्रमाणित समझता हूं। परन्तु दोनोंका हो ईश्वरीय ज्ञान पुस्तकके पदसे च्युत समझता हूं।

सी० १२ सू० हूद आ० ४६

(१०८) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने उसको वही द्वारा अपने बन्द पर उतारा है। पर क्या खुदा और उसका जबराईल केवल मूसा, ईसा, इबराहीम, नूह, लूत आदि बाइबिली नाम ही जानते थे। क्या उनको भारतवर्षके ऋषि मुनी; पाण्डव, कौरव, रामचन्द्र और सीता, विक्रमादित्य, गौतम, बुद्ध, कणाद, पातञ्जलि आदिके नाम नहीं आते थे? और क्या यह सबके सब ईसा मूसासे कम थे? फिर वही शरीफ और कुरान शरीफ

में उनका नाम क्यों न आया। सिकन्दरको तो जुलकरनैन (जिसका पूर्वसे पश्चिम तक राज्य था और जिसने कुरानका कोष और हदीस एकत्र किये) के नामसे स्मरण किया है। पर चन्द्रगुप्तका नाम कहीं नहीं आया। मेरी तो यह सम्मति है कि न खुदाने बही भेजी न जबराईल आया। रसूल खुदाने अपनी सौदागिरीके दिनोंमें यात्रा करते हुए श्याम देश आदिके सूबोंमें जो नाना प्रकारकी कहानियां यहूदी लोगोंसे सुनी सो उनको स्मरण रहीं और स्वप्नमें वे ही दृष्टिगत हुईं। यद्यपि इसमें भी अनेक भूल रह गई है, जो बाइबिलके देखनेसे साफ हो सकती थीं। इस कारण मैं इलहामी वा ईश्वर कृत पुस्तक नहीं मान सकता।

सी० १४ सू० नहल आ० १०१-१०३

(१०६) कुरानकी शिक्षा है कि अहले किताब (ईश्वरकृत रसूल द्वारा आई हुई पुस्तकोंके अनुयायी) ने जो यहूदी और निसारा आदि लोग हैं, इञ्जिल और तौरेतमें कुछ अदल बदल कर दिया है। इञ्जिल और तौरेतके अतिरिक्त जबूर और अन्य पुस्तकोंमें नबियोंका भी संक्षेप वृत्तान्त कुरानमें आया है पर इस में वेद शास्त्र जिन्दावस्था आदि पुस्तकोंका कहीं नाम नहीं आया। जिससे विदित होता है और सम्भव है कि नह पुस्तकें कुरानसे पीछे बनी हो। यदि पहिले होतीं तो इञ्जील और तौरेतकी भांति इनका भी कुरानमें वर्णन होता, परन्तु यह कहना ऐसा ही है जैसा कि बाबर बादशाह औरङ्गजेबके पश्चात् उत्पन्न

हुआ, नहीं वेद शास्त्र और जिन्दावस्थाकी पुस्तकें सहस्रों वर्ष कुरानसे पहलेसे थीं। शेष रही यह बात कि कुरानमें इनका कहीं वर्णन नहीं, इसका यह कारण है कि जिस बुद्धिसे कुरान की उत्पत्ति हुई उस बुद्धिने कभी वेदका शब्द नहीं सुना था। इस कारण अशक्त है।

सी० २६ सू० फतह आ० ३६

(११०) कुरानकी यह शिक्षा है कि शपथ मत खाओ। परन्तु खुदाने वही द्वारा कोहतूर; मक्का, जैतून, घोड़ा, हवाओं आदिकी शपथ खाई थी। क्या कारण कि खुदाने हिमालय एल्पस, विन्ध्याचल पर्वतों और भारतवर्षके आड़ू, आलूचों सन्तरों और भैंस हाथी आदिकी कहीं शपथ नहीं खाई? जिन पदार्थोंकी अरबी लोग प्रतिष्ठा करते थे और जिनकी वह शपथ खाते थे, उनकी तो शपथ खाई परन्तु जो पदार्थ इनसे बढ़कर उत्तम थे, उनकी शपथ न खाई क्या कारण कि खुदाने कुरानमें किसी विशेष नदीकी शपथ न खाई। यदि अरबमें नदी नहीं थी तो गंगा, ब्रह्मपुत्र, बालगा डेन्यूब, मसूरी, मिसीसिपी एमेजन जैसी नदी उस समय खुदाको नहीं दीख पड़ती थीं। कहीं तो कुरानमें कहा होता। शपथ है मुझे गंगाकी, वा शपथ है मुझे मसूरी मिसीसिपीकी वा शपथ है मुझे यमुना बालगा की, पर ऐसी शपथ नहीं है! क्यों? इसका कारण कि जिस बुद्धिके भीतरसे कुरानी शपथ निकली उसने गङ्गा, यमुना, बालगा, डेन्यूब काहे को देखे थे और काहे को मरुभूमिमें उसने कोई

नदी देखी थी। इस कारण मैं कुरानको केवल एक मनुष्यकी बुद्धिकी गढ़न्त मानता हूं।

सी० २६ सू० मुरसिलात आ० १-५

(१११) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने अनपढ़ोंमें अनपढ़ रसूल भेजा। तो क्या पढ़े लिखे विद्वान् लोगोंके लिये एक अनपढ़की बात माननीय हो सकती है। और जिस पुस्तकमें यह वर्णन हो कि सूर्य एक दल २ में अस्त होता है, ईसा बिना बाप के उत्पन्न होगया, लाठींका सांप बन गया इत्यादि २ हम इस पुस्तकको माननीय समझ सकते है। कमसे कम मैं तो एक यथार्थ माननीय मनुष्यरचित पुस्तक भी नहीं कह सकता, जिस प्रकार इसको खुदाकी पुस्तक कहूं इस कारण मैं विवश हूं कि कुरानको ईश्वरीय पुस्तक मानूं।

सि० २८ सु० जुमआ आ० २

(११२) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने उसको अरबी भाषा में उतारो, यह इस कारण कि लोग उसको फारसी भाषामें होने पर यह न कहदें कि हम इसको नहीं समझ सकते। भला! क्या खुदाको ज्ञात न था कि अन्य मनुष्य जो अरबी नहीं जानते वह भी अरबोंकी सी ही शंका करेंगे अन्यथा हमको मानना पड़ेगा कि जिस समय कुरान भेजा गया उस समय जितने मनुष्य संसारमें थे उन सबकी अरबी भाषा थी, इस कारण उन सबको शिक्षाके लिये खुदाने आदिमें जब कि सब संसारमें एक भाषा प्रचलित थी कुरान भेजा। परन्तु यह बात मान ली गई

है कि आज से १३ या १४ सौ वर्ष पहले अरबी भाषाके साथ २ ग्रीकलैटिन आदि भाषायें प्रचलित थीं, कि जिनका अरबीके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है ! इसलिये मैं इस बोतको नहीं मान सकता कि ईश्वरीय पुस्तक जो साधारण मनुष्योंके उपदेशके लिये उतरे वह एक ऐसी भाषामें हो कि जिसके सिवाय कुछ जाति और जङ्गली भ्रमणकर्त्ताओंके कोई न समझ सकता हो। अतएव यह आवश्यक है कि खुदाके वाक्य आदि सृष्टिमें ऐसी भाषामें हो जो सब भाषाओंकी जड़ हो। कुरान इसमें नहीं है। इस कारण मैं उसको ईश्वर वाक्य नहीं मानता।

सी० २४ सू० हमसिजदा आ० ४४

(११३) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाके वाक्य नहीं बदल सकते। यदि वाक्योंके अर्थ हम सृष्टि नियमके लें तो हम देखते हैं कि कुरान कैसा सृष्टि नियम विरुद्ध बातों और कपोल कल्पनाओंसे भरा हुआ है। यदि वाक्योंके अर्थ केवल बातों या आयतोंके लें तो भी हम देखते हैं कि एक आयतको बदलकर दूसरी आयत उतारी गई है। जैसा कि कुरानमें इस बातका वर्णन है कि 'हम नहीं मनसूख (अन्यथा) करते किसी आयत को। पर यह कि 'उतारें इससे और अच्छी आयत, सत्यासत्य के निर्णय करने वाले मनुष्य कितनी ही कुरानी आज्ञायें ऐसी देख सकते हैं कि जो पहले उचित समझी गई। फिर निषेध की गई। मदिराका पहले निषेध नहीं किया किन्तु बहुत काल के पश्चात् निषेध किया। इसी प्रकार और कई बातें एक तरह

पाईं, पर फिर दूसरी भांति करदी गई। यथा पहले वैतुल मुकद्दस फिर काबेकी ओर मुंह करके नवाज पढ़ना, तो क्या खुदा की आज्ञा कुरानमें अटल हुई? कदापि नहीं। फिर मैं किस प्रकार मानलूं कि यह ईश्वर वाक्य है, जिसमें एक दिनके पश्चात् ही आज्ञा बदल दी जाती है।

सी० ७ सू० अनफान आ० ११३

(११४) कुरानकी शिक्षा है कि मोहम्मद लोगोंको जो काफिर नहीं कह दे कि वह और उनके पूज्यदेव कुरान जैसी पुस्तक लायें। यदि वह सच्चे हैं और निश्चय वह नहीं बना सकेंगे। निदान वे दोजखमें डाले जायेंगे। महाशय गण! क्या किसी पुस्तकके ईश्वरकी ओरसे होनेका यह कोई प्रमाण है कि उसके समान कोई नहीं बना सकता! कदापि नहीं। यदि यही बात हो तो सम्भव है कि शेक्सपेयरके सब नाटक और मेकाले के लेख जो अपने ढङ्गमें सर्वथा निराले हैं, सब ईश्वरकी ओरसे ही समझने चाहिये। और इसी प्रकार एक दूध पीते बच्चेकी ऊटपटांग बातचीत भी जिसका अनुकरण कोई नहीं कर सकता, ईश्वरकी ओरसे होना चाहिये। क्या यदि कोई मनुष्य चील और कौवोंकी भांति कांय २ वा बन्दरकी भांति चिड़ २ अथवा चिड़ियोंकी नाईं चूं २ नहीं कर सकता तो उसके यह अर्थ होंगे कि बानर, कौवे और चिड़ियां सब खुदाकी बोलियां बोल रहे हैं! कदापि नहीं। इस बातको छोड़कर यदि यह कहा जावे कि कुरानकी उत्तम भाषाकी कोई समता नहीं कर सकता तो मैं

पूछता हूं कि उत्तम भाषा किसको कहते हैं ? क्या यह कि एक ही कहानीको सैकड़ों बार दोहराया जावे और एकही विषयको बारम्बार लाया जावे और एक ही बातको दूसरी तीसरी बार लिया जावे और मकड़ीका शीर्षक देकर सिंह, भेड़िया इत्यादिका वृत्तान्त लिख दिया जावे। मधुमक्खीका विषय लिखते समय बाबा आदम आदिकी कहानियां सुना दी जावें। यदि वास्तव में उत्तम भाषाके यही लक्षण हैं तो निःसन्देह कुरान अद्वितीय है और इस जैसी न आज तक कोई पुस्तक बनी है और न कोई बुद्धिमान बना सकेगा ! और उत्तम भाषाके इस अर्थके अनुसार मेकाले ग्लेडस्टोन पिट जैसे योग्य वक्तृता करनेवाले मनुष्य नितान्त मूर्ख और वक्तृतासे रहित समझे जा सकते हैं। यदि उत्तम भाषा और सद्वक्तृता कोई और पदार्थ है और वास्तवमें वह कुछ और पदार्थ है तो मेरी सम्मति अनुसार तो कुरानका पद सद्वक्ताके सबसे नीचेके भागमें रखना चाहिये जिससे कोई मनुष्य उसको पढ़कर सद्वक्तृता करनेवाला होनेकी चेष्टा न करे। मुझे जान नहीं पड़ता कि खुदाने क्यों एक ही बातको बारम्बार दोहरानेके लिये जबराईलको थकाया। केवल यह कह देना उचित था कि बाबा आदमकी कहानीको बीसबार, इबराहिमकी कहानीको पन्द्रहबार और बहिस्तके किस्सेको एक कम अस्सीबार लिख लो, चलो जी छुट्टी हुई। भाई! मेरी बुद्धि इस बातका कदापि अङ्गीकार नहीं कर सकती कि कुरान स्वयं रसूल खुदाका अद्वितीय मौजजा तू ईश्वरकृत पुस्तक है।

सी० १ सू० बकर आ० २३

(११५) कुरानकी शिक्षा है कि हे रसूल ! तू लोगोंको सुनादे कि यदि कुरान खुदाकी ओरसे न होता तो उसकी बातों में भेद पाया जाता।

महाशयगण ! विचारिये 'कुन्, का दम भरना परन्तु फिर भी छः दिनमें पृथिवी और आकाशका बनाना, मां और बापके वीर्यसे मनुष्यकी उत्पत्तिकी शिक्षा पर आदमको बिना मां बाप के और हजरत ईसाको बिना बापके उत्पन्न करना ! ला तबदीला ले कल्मतिल्लाः' (खुदाके नियम बदल नहीं सकते) का दम भरना, किन्तु फिर भी लाठियोंके सांप बनाना और पत्थरों मेंसे ऊंटोंका उत्पन्न करना, खुदाका पवित्र होना, किन्तु फिर भी उसका मक्कार फरेबी लड़ाका कुमार्ग पर चलानेवाला, विघ्नकर्त्ता होना आदि बातें कैसी एक दूसरेके विरुद्ध हैं। निदान कुरान एक मनुष्य रचित पुस्तक है। खुदा और बहीका बदनाम है। शोक कुरानमें भीतर तो वह बारूद भरी हुई है कि जिससे वह उड़ रहा है। सच है यह मिसरा "इस घरको आग लग गई घरके चिरागसे"।

सी० ५ सू० नसाय आ० ८२

(११६) कुरानकी शिक्षा है कि वह लोगोंके लिये उपदेश है। मैं पूछता हूं कि खुदाके वाक्य और वह भी लोगोंके उपदेशके लिये, परन्तु उनमें मुअम्मों (रहस्यों) और पहेलियोंका क्या तात्पर्य ! अब तक बड़े २ भाष्यकार और वक्ता ही नहीं किन्तु रसूल खुदाके असहाब (बन्धु) भी प्रयत्न कर चुके हैं, पर कुरानके हरूफमुक्तअका आशय किसीकी बुद्धि में नहीं आया।

अन्तमें कहना पड़ा कि यह एक भेद है जिसको खुदाही जानता है भला बताइये उपदेश तो लोगोंके लिये पर भेद किसके लिये ? लिखे मुसा, पढ़े खुदा ! इसके अतिरिक्त कितनी ही आयतें ऐसी हैं कि जब तक आप तफसीर (व्याख्या) और हदीस (मुहम्मदके बचन) को लेकर न बैठें टक्टरें मारिये पर आशय समझमें नहीं आयगा ! डण्डेका एक सीतमात्र की नाईं देखिये "अलम्ताः कैफा फअला रब्बोका बअसहा बिलफल" (सिपारः ३० सूरतुलफील) क्या तू ने नहीं देखा कि तेरे खुदाने हाथी वालोंके साथ क्या किया ! इन्नशाने अकहुमल अबतर (सिपारः ३०) तेरी बुजर्गों की कसम की वह मनुष्य दुर्दशामें है । आदि २ सहस्रों आयत हैं । हदीसको अलग रखिये । तफसरिको दूर रख दीजिये और फिर कोई मनुष्य बताइयें कि ' असहाबफील और अब' क्या भेद है मेरी अनुमतिमें ऐसी पुस्तककी जिसके विषयको जाननेके लिये मनुष्यकृत पुस्तकोंकी आवश्यकता पड़े पूर्ण और ईश्वर कृत नहीं हो सकती ।

सी . १३ सू० यूनस आ . ५७

बात बढ़ी जाती है इसलिये इसको छोड़कर मैंने उपरोक्त कुछ कारण मुसलमानी मत छोड़नेके विषयमें वर्णन कर दिये है । शेष यह बात कि वेदोक्त धर्ममें मुझे क्या भलाई दीख पड़ी इसके लिये पृथक् व्याख्यानकी आवश्यकता है । यहां पर केवल इतना ही कह देना उचित समझता हूं कि वेदोक्त धर्म कुरानी खुदा और शैतानके झगड़े, बाबा आदम और हव्वा (आदमकी स्त्री) की कहानी, धिनोने बहिश्त और डरावने दोजख तोबाह

इस तग़फ़ार शफ़अत हश्र नश्र हिसाब किताब तराजू पलड़ा फरिश्ते जिन्न मांसाहार पशु वध, पत्थरोंके चूमने, मकानके चारों ओर घूमने, दिन ही में भूखा रहने रातको नियम विरुद्ध खाने, खुदाकी इबादत (पूजा)में टांग हाथ पांव हिलाने उठने बैठने स्त्रियों पर बलात्कार करने मिथ्या बातोंको न मानने वालोंको उच्चजीवन व्यतीत करने वालोंको काफिर कहने, उनसे घृणा करने, लड़ने भिड़ने लूटने खसोटने बन्दी करने खुदाके साथ किसी दूसरेको शरीक करने आदि २ सर्व मिथ्या बातोंसे रहित है। कदाचित् कोई मनुष्य यहां पर पुनर्जन्म और नियोगके सिद्धान्त को पेश करदे। मैं पुनर्जन्मको न्यायका मूल और नियोगको व्यभिचारके निर्मूल करने हारा समझता हूं। यदि पुरुष और स्त्री पूर्ण ब्रह्मचर्यके स्टेजके भीतरसे होकर अपने आप को नियोगका अधिकारी बना सकें तो संसारमें से व्यभिचार अपने घृणित और भयानक परिणाम सहित लोप होजावे। निः-सन्देह नियोग उस समयका स्मारक है जब कि स्त्रीको खेती, गुलाम संपत्ति समझनेके स्थानमें अर्धांगी समझा जाता था और जब स्त्री और पुरुषका परस्परसे सम्बन्ध करना विशेष भोगकी तृप्तिके लिये नहीं छूटता था, परन्तु शोक है! मनुष्य जितना विषय भोगका वशीभूत होता गया, स्त्री जातिके अधि-कार न्यून होते गये। यहां तक कि आज कल उसकी प्रतिष्ठा बहुधा मनुष्योंमें एक गाय, भैंस, भेड़ बकरीके समान रह गई, कि जिसको जब चाहा अपने घरसे निकाल बाहर फेंक दिया

5341

शोभाके साथ प्रकट कर दिया कि जिसकी किरणोंसे आर्यावर्त्त निवासी ही नहीं चौंधिया गये, वरन् सहस्रों मीलके अन्तर पर अमेरिकामें बैठा हुआ एनड्रो जेक्सन भी चकित हो गया। इस कारण जिस प्रकाशसे पत्थर २ दीखने लगे और जिस प्रकाशको पाकर सहस्रों मनुष्य मुंहसे हड्डियोंको गिराकर क्रूरतासे निकल आये उसी प्रकाशने नियोगके सिद्धान्तका भी प्रकाश किया कि जिसके लिये आज कल चारों ओरसे कतिपय हिन्दू मुसलमान सिक्ख, भाई वह शब्द नियत: कर रहे हैं, जो मेरे विचारमें आज कलके कुछ निकाह वा विवाह पर घटना उचित है क्योंकि वह पुरुष और वह स्त्री जो पूर्ण ब्रह्मचारी न रहकर इन्द्रियोंको दमन नहीं कर सकते वे निकाह वा विवाह तो वर्त्तमान प्रथानुसार नि:सन्देह कर सकते हैं पर नियोग नहीं कर सकते, यदि करें तो महान् पापके भागी होंगे। क्योंकि नियोग वह पवित्र सिद्धान्त है कि जिसके नियमोंका पालन करना साधारण मनुष्यका कार्य्य नहीं है।

अन्तमें मेरी अन्त:करणसे प्रार्थना है कि पक्षपात हठ धर्मीके पर्दोंको चीर कर तहकीकात (सत्य निर्णण करनेका विचार) का स्वभाव सबमें उत्पन्न हो जो बुरे सिद्धान्त हैं उनको छोड़ने और जो अत्युत्तम सिद्धान्त हैं उनको स्वीकार करनेकी सामर्थ्य मेरे अन्य हिन्दू; मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, भाइयोंको भी प्राप्ति हो। तथास्तु।

(नोट) इन सूचनाओंके अतिरिक्त जो कि समीक्षाओंके साथ दी गई हैं अन्य भी कितने [illegible] स्थानमें वृत्तान्त हैं, जो विस्तार [illegible]

और दूसरी गाय लेली। ऐसे लोगोंके सम्मुख यदि हम विषय भोगकी अन्धेरियोंसे पड़ी हुई मिट्टीके सब पर्त हटाकर स्त्री और पुरुषके परस्परके सम्बन्ध उसके निमित्त कारणको स्पष्ट रूपसे वर्णन करके नियोग विषय दिखावें भी तो सब चिल्ला उठेंगे, "व्यभिचार! व्यभिचार!! व्यभिचार!!! निःसन्देह वह देश और वह जाति और उस देश और उस जातिके वह पुरुष और वह स्त्रियां जो ब्रह्मचर्यका नाम भी न जानती हो और जिनके लिये वर्षों तक पूर्ण ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी रहकर विद्योपार्जन करते हुए सब विषय भोग छोड़ इन्द्रियोंको वशमें करना और फिर उसके पश्चात् केवल वंश रक्षाके लिये परस्पर विशेष सम्बन्ध करना असम्भव हो गया हो, वह यदि नियोगको व्यभिचार कहें तो ठीक है और वे विवश हैं पर मैं इससे यह परिणाम नहीं निकाल सकता कि इस विषयमें किसी सोसाइटीकी पतित दशा होनेके कारण नियोगके सिद्धान्त (पर अमल) का प्रचार नहीं हो सकता, तो वह सिद्धान्त ही अशुद्ध हुआ नहीं सोसाइटी किसी उच्च वा पवित्र सिद्धान्तको निर्बलता वा मूर्खताके कारण भुला सकती। पर समय आने पर विशेष साधनोंके उत्पन्न हो जाने से जब वह निर्बलता और मूर्खता दूर हो जाती है तो वह सिद्धान्त ऐसे ही प्रकाशसे दीप्तमान् होने लग जाता है, जैसे आर्यावर्त्त की लाखों वर्षोंसे पत्थरोंके नीचे छिपी हुई यथ ईश्वरीय विद्याका सूर्य कि जिसको ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द पर्थोंमें बन्द वेदोंके भीतरसे ऐ